रजिस्ट्रेशन : बी आर 35/0029626

आईएसएसएन नंबर : 9334-0970

प्रान्ति इंडिया

www.prantiindia.com

प्रधान संपादक : ए. के. प्रसाद

+91 9453535495 | editor@prantiindia.com

वर्ष 01, अंक 03, पेज 53, मूल्य ₹150 | मासिक साहित्यिक पत्रिका | सितंबर 2024, बगौरा (बिहार) से प्रकाशित

इस अंक में

हमारे बारे में 03
संपादन मंडल 04
प्रबंधन विभाग 05
समन्वयन समिति 06
सलाह केंद्र 07
अभिकल्पन प्रकोष्ठ 08
हमारे संपादक 09
संपादकीय 10
आपके पत्र 11
चित्रकारी 12
साक्षात्कार 13

चयनित कविताएं

हिंदी बने राष्ट्र भाषा 15
मैं एक शिक्षक हूं 16
जीवन का आधार 17
मार्गदर्शक 18
शिक्षक महान 19
हे गुरुदेव! 20
कण-कण में गुरु 21
गुरु ज्ञान की मूरत 22
शिक्षक 23
सनातन धर्म 24
श्री गणेश 25
आजादी का पर्व 26
लोग 27
मानव 28
मां 29
दरिया अब शांत है 30
रार 31
टूटना 32
प्रलय 33

कुछ आलेख

अभिलाषा: एक फूल/डॉ. रशीद ग़ौरी 34
एक नई सीख/गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू' 35

निः स्वार्थ/स्नेह गोस्वामी 36
अहमियत/प्रमोद झा 37
संस्कृत वाले सर/अन्जना मनोज गर्ग.....39
शिक्षक एक रचना/अभिषेक नागर 40
उपाध्याय सर/नीरज वर्मा 41
हिन्दी बहन/पद्मा अग्रवाल 42
मूल्यांकन/अरुण प्रिय 43
राघव पंडित जी/डॉ. सतीश बब्बा 44
मेरा छात्र प्रेम 'ओझा'/डॉ. अनिता जठार 45
प्याजी पकौड़े/प्रेमलता यदु 46
वो नाश्ता/मृत्युंजय कुमार मनोज 47
मां का कर्ज/डॉ. लेखराज शर्मा 48

हमारे बारे में

प्रान्ति इंडिया एक साहित्यिक संगठन है जो भारत में स्थित है। इसका मुख्य उद्देश्य साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में नए और स्थापित लेखकों को प्रोत्साहित करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित करना है। प्रान्ति इंडिया की स्थापना साहित्य सेवा के उद्देश्य से सन् 2021 में ए. के. प्रसाद द्वारा की गई थी, जो एक प्रकाशक और संपादक हैं। उन्होंने अपने जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं और साहित्य के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है। प्रान्ति इंडिया की अनुभवी विषय-विशेषज्ञों, लेखकों और संपादकों की प्रतिबद्ध टीम गहन शोध एवं विश्लेषण के पश्चात् गद्य व पद्य, दोनों में सर्जनात्मक लेखन प्रकाशित करती है। प्रान्ति इंडिया की अनुभवी टीम में पीएच.डी., एम.ए., बी.एड. इत्यादि डिग्रीधारी विशेषज्ञ शामिल हैं। इनका एकमात्र उद्देश्य अपने सर्वोत्तम ज्ञान, अनुभव व प्रयासों को आपतक पहुँचाना है। इस टीम द्वारा प्रदत्त आँकड़ों एवं तथ्यों को विभिन्न मानक एवं प्रामाणिक स्त्रोतों का उपयोग कर तैयार किया जाता है। प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की एक मीटिंग में विचार-विमर्श के बाद सर्वसम्मति से ए. के. प्रसाद के संपादकत्व में मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया का जुलाई 2024 में शुभारंभ हुआ। प्रान्ति इंडिया की मासिक साहित्यिक पत्रिका का उद्देश्य नवोदित रचनाकारों की रचनाओं का प्रकाशन कर नवांकुर के सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करना है। यह पत्रिका विभिन्न प्रकार की सामग्री प्रकाशित करती है, जैसे कि कविताएं, गज़लें, कहानियां, निबंध, एकांकी, नाटक, चित्रकला, आदि। प्रान्ति इंडिया की पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लिए रचनाकारों के विचार उनके निजी होते हैं और उनसे स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक का सहमत या असहमत होना जरूरी नहीं है। अगर कॉपीराइट का कोई मामला सामने आता है, तो केवल रचनाकार को ही जिम्मेदार ठहराया जाएगा। प्रान्ति इंडिया का राजिस्ट्रेशन : बी आर 35/0029626 तथा आईएसएसएन नंबर 9334-0970 है। इसका कार्यालय बगौरा, बिहार 841404 में स्थित है। प्रान्ति इंडिया के लिए यदि आपके पास कुछ सुझाव/शिकायत है तो विभागीय कार्रवाई के लिए निम्नांकित विभागों के eमेल पर अथवा मुख्य कार्यकारी अधिकारी को डाक द्वारा भी भेज सकते हैं।

संपादन मंडल : editor@prantiindia.com

प्रबंधन विभाग : manager@prantiindia.com

समन्वयन समिति : coordinator@prantiindia.com

सलाह केंद्र : advisor@prantiindia.com

अभिकल्पन प्रकोष्ठ : designer@prantiindia.com

इसके अलावा, प्रान्ति इंडिया सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर भी सक्रिय है, जैसे कि फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, आदि। आप प्रान्ति इंडिया को सोशल मीडिया पर फॉलो कर सकते हैं और साहित्यिक गतिविधियों में भाग ले सकते हैं।

संपादन मंडल

प्रान्ति इंडिया के संपादकीय कार्यान्वयन के लिए संपादक ए. के. प्रसाद की अध्यक्षता में 02 जुलाई 2024 को संपादन मंडल का गठन किया गया।

संपादन मंडल के कार्य:

- सामग्री की समीक्षा और संपादन: संपादन मंडल प्रान्ति इंडिया के लिए प्रस्तुत की गई सामग्री की समीक्षा और संपादन करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सामग्री उच्च गुणवत्ता की है और पाठकों के लिए उपयुक्त है।

- सामग्री की योजना और विकास: संपादन मंडल सामग्री की योजना और विकास के लिए जिम्मेदार है, जिसमें विषयों का चयन, लेखकों का चयन, और सामग्री के प्रारूप का निर्धारण शामिल है।

- सामग्री की प्रकाशन तैयारी: संपादन मंडल सामग्री की प्रकाशन तैयारी के लिए जिम्मेदार है, जिसमें सामग्री का संपादन, प्रूफरीडिंग, और डिज़ाइन शामिल है।

- गुणवत्ता नियंत्रण: संपादन मंडल गुणवत्ता नियंत्रण के लिए जिम्मेदार है, जिसमें सुनिश्चित किया जाता है कि प्रकाशित सामग्री उच्च गुणवत्ता की है और पाठकों के लिए उपयुक्त है।

इन कार्यों के माध्यम से, संपादन मंडल प्रान्ति इंडिया के संपादन कार्यों को संभालता है और साहित्यिक उत्कृष्टता की दिशा में काम करता है।

संपादन मंडल के सदस्य:

1. डॉ. लेखराज शर्मा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. डॉ. विनीत विद्यार्थी (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. डॉ. अनिता जठार (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. डॉ. गायत्री कोंपल (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के संपादन कार्यों को संभालने की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि किस स्तर की प्रकाशन सामग्री पुस्तक पत्रिका के लिए चयनित व प्रकाशित होगी।

हमारा eमेल है : editor@prantiindia.com

प्रबंधन विभाग

प्रान्ति इंडिया के दैनंदिन प्रबंधन के लिए प्रबंधक प्रदीप प्रसाद की अध्यक्षता में 02 जुलाई 2024 को प्रबंधन विभाग का गठन किया गया।

प्रबंधन विभाग के कार्य:

- दैनिक कार्यों का संचालन और निगरानी: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के दैनिक कार्यों का संचालन और निगरानी करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी कार्य समय पर और प्रभावी ढंग से पूरे हों।

- संसाधनों का प्रबंधन और आवंटन: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के संसाधनों का प्रबंधन और आवंटन करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी विभागों और टीमों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध हों।

- कार्यक्रमों का आयोजन और समन्वय: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के कार्यक्रमों का आयोजन और समन्वय करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी कार्यक्रम समय पर और प्रभावी ढंग से आयोजित हों।

- नीतियों का निर्धारण और लागू करना: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया की नीतियों का निर्धारण और लागू करने के लिए जिम्मेदार है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी कार्यों में एकरूपता और संगठन हो।

- संचार और समन्वय: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के विभिन्न विभागों और टीमों के बीच संचार और समन्वय करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी कार्यों में तालमेल और संगठन हो।

इन कार्यों के माध्यम से, प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के कार्यों में अधिक संगठन और प्रभावी ढंग से संचालन सुनिश्चित करता है।

प्रबंधन विभाग के सदस्य:

1. श्री रामजी मल (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. श्री अच्युत उमर्जी (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. श्री अरुण शुक्ला (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. श्रीमती नीरज वर्मा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. श्रीमती प्रेमलता यदु (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के प्रबंधन कार्य को संभालने की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि उद्देश्यों और लक्ष्यों के लिए संसाधनों का समय पर इंतजाम हो।

हमारा eमेल है : manager@prantiindia.com

समन्वयन समिति

प्रान्ति इंडिया के गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए समन्वयक फुलवन्ती देवी की अध्यक्षता में 02 जुलाई 2024 को समन्वयन समिति का गठन किया गया।

समन्वयन समिति के कार्य:

- गतिविधियों का समन्वयन करना: समन्वयन समिति सभी गतिविधियों का समन्वयन करती है, जैसे कि साहित्यिक कार्यक्रम, प्रकाशन व अन्य साहित्यिक आयोजन। यह सुनिश्चित करती है कि सभी गतिविधियां उद्देश्यों के अनुसार चल रही हैं और एक दूसरे के साथ समन्वयित हैं।

- टीम के बीच समन्वय स्थापित करना: समन्वयन समिति टीम के सदस्यों के बीच समन्वय स्थापित करती है ताकि वे एक दूसरे के साथ प्रभावी ढंग से काम कर सकें। यह सुनिश्चित करती है कि सभी सदस्य एक दूसरे के काम से अवगत हैं और एक दूसरे की जरूरतों को पूरा कर रहे हैं।

- सहयोगी के साथ समन्वय स्थापित करना: समन्वयन समिति सहयोग करने वाले संगठनों और व्यक्तियों के साथ समन्वय स्थापित करती है ताकि हमें अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद कर सके। यह सुनिश्चित करती है कि सभी सहयोगी संगठन व व्यक्ति उद्देश्यों के अनुसार काम कर रहे हैं।

- प्रगति की निगरानी करना: समन्वयन समिति प्रगति की निगरानी करती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हम अपने उद्देश्यों की दिशा में आगे बढ़ रहे है। यह सुनिश्चित करती है कि सारी गतिविधियां प्रभावी ढंग से चल रही हैं। हम अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रगति कर रहे हैं।

इन कार्यों के माध्यम से, समन्वयन समिति प्रान्ति इंडिया के गतिविधियों में समन्वयन को संभालता है और लक्ष्यों की प्राप्ति के उद्देश्य से काम करता है।

समन्वयन समिति के सदस्य:

1. सुश्री इला कुमारी (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. सुश्री सोनल ओमर (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. सुश्री नेहा चौरसिया (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. सुश्री पल्लवी श्रीवास्तव (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. सुश्री रितु झा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के गतिविधियों के क्रियान्वयन में तालमेल को संभालने की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि कब और किस तरह साहित्यिक गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन के लिए योजना बनाई जाए।

हमारा eमेल है : coordinator@prantiindia.com

सलाह केंद्र

प्रान्ति इंडिया के मार्गदर्शन के लिए सलाहकार प्रशान्त अमन की अध्यक्षता में 02 जुलाई 2024 को सलाह केंद्र का गठन किया गया।

सलाह केंद्र के कार्य:

- मार्गदर्शन प्रदान करना: सलाह केंद्र संगठनिक मार्गदर्शन प्रदान करेगा, जिसमें संगठन की गतिविधियों और नीतियों को विकसित करने में मदद की जाएगी। यह मार्गदर्शन उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

- समस्या समाधान संबंधी सलाह: सलाह केंद्र समस्याओं का समाधान करने में मदद करेगा, जो संगठन की प्रगति में मदद करेगा। यह समस्या समाधान संबंधी सलाह उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

- विकास संबंधी सलाह: सलाह केंद्र विकास में मदद करेगा, जो सुनिश्चित करेगा कि संगठन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए तैयार है। यह विकास संबंधी सलाह उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

- सुधार संबंधी सलाह: सलाह केंद्र संगठन में सुधार करने में मदद करेगा, जो सुनिश्चित करेगा कि संगठन अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए तैयार है। यह सुधार संबंधी सलाह उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

इन कार्यों के माध्यम से, सलाह केंद्र प्रान्ति इंडिया को मार्गदर्शन प्रदान करेगा और संगठन की प्रगति में मदद करेगा।

सलाह केंद्र के सदस्य:

1. श्री रवि शर्मा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. श्री विनोद प्रसाद (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. श्री भोला शरण प्रसाद (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. श्री व्यग्र पाण्डेय (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. श्रीमती स्नेह गोस्वामी (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के लक्ष्यों व उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि मार्गदर्शन और सलाह की सहायता से गतिविधियां सही दिशा में चल रही है।

हमारा eमेल है : advisor@prantiindia.com

अभिकल्पन प्रकोष्ठ

प्रान्ति इंडिया के रचनात्मक संयोजन के लिए अभिकल्पक सौरभ कुमार की अध्यक्षता में 11 जुलाई 2024 को अभिकल्पन प्रकोष्ठ का गठन किया गया।

अभिकल्पन प्रकोष्ठ के कार्य:

- पुस्तक का कवर डिजाइन करना: अभिकल्पन प्रकोष्ठ पुस्तक के कवर का डिजाइन बनाता है, जिसमें पुस्तक का शीर्षक, लेखक का नाम, और अन्य आवश्यक जानकारी शामिल होती है।

- पुस्तक के अंदर चित्र डिजाइन करना: अभिकल्पन प्रकोष्ठ पुस्तक के अंदर चित्रों का डिजाइन बनाता है, जिसमें ग्राफिक्स, चित्र, और अन्य दृश्य तत्व शामिल होते हैं।

- वेबसाइट डिजाइन और विकास: अभिकल्पन प्रकोष्ठ वेबसाइट का डिजाइन और विकास करता है, जिसमें वेबसाइट की संरचना, डिजाइन, और कार्यक्षमता शामिल है।

- सोशल मीडिया डिजाइन और प्रबंधन: अभिकल्पन प्रकोष्ठ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर सामग्री का डिजाइन और प्रबंधन करता है, जिसमें पोस्ट, ग्राफिक्स, और अन्य दृश्य तत्व शामिल होते हैं।

इन कार्यों के माध्यम से, अभिकल्पन प्रकोष्ठ प्रान्ति इंडिया के रचनात्मक कार्यों को संभालता है और कौशल विकास की दिशा में काम करता है।

अभिकल्पन प्रकोष्ठ के सदस्य:

1. श्री शशि धर कुमार (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. श्री अंकुर सिंह (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. श्री रोहताश वर्मा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. श्री आनंद सिसोदिया (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. श्री खुमन सिंह (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के प्रकाशन सामग्री के डिजाइन कार्यों को संभालने की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि डिजाइन सामग्री आकर्षक और प्रभावशाली हो।

हमारा eमेल है : designer@prantiindia.com

हमारे संपादक

ये हैं ए. के. प्रसाद जिनका जन्म 10 जनवरी को बिहार के सीवान में स्थित बगौरा में वैश्य परिवार में हुआ था। इनके पिताजी श्री प्रदीप प्रसाद और पितामह श्री जगदीश प्रसाद व्यवसायी हैं। माताजी श्रीमती फुलवन्ती देवी गृहिणी हैं। इन्होंने शुरुआती शिक्षा गांव से प्राप्त करने के पश्चात काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) से अपनी पढाई पूरी की। इनकी बाल्यकाल से हिन्दी साहित्य के अध्ययन में विशेष रूचि का परिणाम सातवीं कक्षा में दिखने लगा। अपने शब्दचयन, भाषा, संवेदना की ताजगी और रचना विन्यास में चौकस संधान जैसी विशेषताओं के कारण उन्होनें हिंदी साहित्य के सुधी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया और देश के कोने कोने में कवि सम्मेलनों में जाकर कविता सुनाकर सभी को आनंदित कर वाह-वाही लूटने लगे। ये अपने पिताजी के सानिध्य व सहयोग से एक प्रकाशक के रूप में इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में उदित हुए। इन्होंने साहित्य सेवा के उद्देश्य से सन् 2021 में प्रान्ति इंडिया की स्थापना की। इन्होंने कुछ दिन व्यक्तिगत रूप से कार्यों का अनुभव लिया फिर एक अनुभवी विषय-विशेषज्ञों, लेखकों और संपादकों की प्रतिबद्ध टीम का गठन कर गहन शोध एवं विश्लेषण के पश्चात् गद्य व पद्य, दोनों में सर्जनात्मक लेखन प्रकाशित करना शुरू किया। अभी तक यह टीम 10 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कर चुकी है और प्रतिवर्ष लगभग 8-10 नई पुस्तकें प्रकाशित करने का इरादा रखती है। इस अनुभवी टीम में पीएच.डी., एम.ए., बी.एड. इत्यादि डिग्रीधारी विशेषज्ञ शामिल हैं। इनका एकमात्र उद्देश्य अपने सर्वोत्तम ज्ञान, अनुभव व प्रयासों को आपतक पहुँचाना है। प्रान्ति इंडिया की टीम द्वारा प्रदत्त आँकड़ों एवं तथ्यों को विभिन्न मानक एवं प्रामाणिक स्त्रोतों का उपयोग कर तैयार किया जाता है। इनका सदैव यह प्रयास रहता है कि सरल व सहज भाषा-शैली में आपके समक्ष प्रस्तुत हुआ जाए। प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की एक मीटिंग में विचार-विमर्श हुआ कि वर्तमान परिवेश में प्रकाशन व्यवसाय की व्यवस्था कितनी विस्तृत व महंगी हो गयी है। आजकल तो लेखक बनने की इच्छा रखने वाले हर रचनाकार का शुरुआती मन इस दुविधा से जूझता ही है कि यात्रा का प्रारंभ किस प्रकार किया जाए ? सबसे पहले किस प्रकाशक के पास जाया जाए ? यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि रचनाएं छप ही जाएगी ? यदि कहीं गलत जगह नवांकुर अपनी पांडुलिपि और पैसा देकर फंस गया तो फिर किसी और प्रकाशक पर विश्वास कर पुनः प्रयास करना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। इन्हीं सब उधेड़बुन से निकालने के लिए प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की सर्वसम्मति से ए. के. प्रसाद के संपादकत्व में मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया का जुलाई 2024 में शुभारंभ हुआ और यह निर्धारित किया गया कि इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य नवोदित रचनाकारों की रचनाओं का प्रकाशन कर नवांकुर के सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करना है। कोई भी, किसी भी उम्र का रचनाकार अपनी कविताएं, गज़लें, कहानियां, निबंध, एकांकी, नाटक, चित्रकला, आदि प्रकाशन-सामग्री अपने संक्षिप्त परिचय और एक फोटो के साथ कार्यालय में संपादक की eमेल editor@prantiindia.com पर प्रत्येक महीने के 25 तारीख तक भेज सकते है।

संपादकीय

प्रान्ति इंडिया का सितंबर 2024 अंक आप सब के सहयोग से प्रकाशन हेतु तैयार है। इस अंक में आप सब की रचनाएं पहले से बेहतर और सुधरे हुए रूप में प्रकाशित होकर आई हैं। पिछले संपादकीय में पत्रिका के प्रधान संपादक ए. के. प्रसाद जी ने पत्रिका के प्रयोजन की कुछ बुनियादी बातों को बताया था। जैसे एक विशाल वृक्ष स्वार्थ नहीं बल्कि सिर्फ परमार्थ की ही सोचता है उसी तरह प्रान्ति इंडिया के संपादन मंडल ने भी केवल नई प्रतिभाओ को अपने अनुभव ज्ञान से संचित किया है। आपके लेखकीय कर्म को संशोधित कर पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत कर नए नए साहित्यिक दीप जलाने का प्रयत्न किया है। इसके साथ ही समाज में व्याप्त विसंगतियों, नैतिक अवमूल्यन और अलगाववाद के अंधेरों को हटा कर पूरे समाज को रोशन करने की ओर अपने कदम बढ़ाए हैं। इस पत्रिका के प्रधान संपादक एक सरल, शालीन स्वभाव के इंसान हैं। किसी प्रकार का गर्व उन्हें अभी तक छू नहीं पाया है। उन्होंने बड़ी बारीकी से आपकी रचनाओं को देखते हुए सभी को लेखन के मार्ग पर आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करने और उत्साहित करने का काम किया हैं। हम सभी का भी दायित्व बनता है कि पत्रिका को नई दिशाएं देने और समाज के हितार्थ अपनी कलम को केंद्रित करें। मेरे बहुत ही आदरणीय लेखक बंधुओं साहित्य सृजन का औचित्य तभी पूर्ण होगा जब वह समाज के साधारण पाठक वर्ग तक पहुंच पाएगा। इसी प्रयोजन को लेकर ही हम ने आप सब तक पहुंच की है। यह सितंबर 2024 माह बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें अनेक सांस्कृतिक उत्सव आने वाले हैं। विश्व शिक्षक दिवस, अंतराष्ट्रीय हिंदी दिवस आदि इसके श्रृंगार हैं। आने वाले समय में हम कोशिश करेंगे कि प्रमुख साहित्यकारों, विभिन्न देश भक्तों के जन्मदिवस/पुण्यतिथि पर उन के बारे में भी अपने पाठकों तक जानकारी पहुंचाई जा सके। इससे हमारी संस्कृति के प्रति श्रद्धाभाव भी जागृत होगा। आज के दौर में मशीनी बुद्धिमत्ता और नवीन तकनीक के स्वचालित यंत्रों की सहायता से ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करना, मेडिसिन के क्षेत्र में ऊंचाइयां छूना, और अन्य क्षेत्रों में भी नए आयाम स्थापित करना इस नई तकनीक के महत्वपूर्ण अंग हैं। एक समय था जब ज्ञान हमें अपने गुरुओं से मौखिक रूप से प्राप्त होता था, फिर छापेखाने का आविष्कार हुआ और किताबें प्रकाशित होने लगीं। ज्ञान हमारे पास किताबों के माध्यम से पहुंचने लगा। हमारे बुजुर्गों ने इस तकनीक के महत्व को पहचाना और स्वीकार किया, और बड़े बड़े ग्रंथ, शब्दकोश, और शिक्षकों की सहायता के लिए पुस्तकों का निर्माण किया गया। आधुनिक दौर में तकनीक ने और अधिक विकास किया है, और हमारी वर्तमान पीढ़ी इसे बड़े जोर-शोर से अपना रही है। अब शिक्षा स्क्रीन के माध्यम से मिलने लगी है, और स्कूलों से भी कभी-कभी बच्चे ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करने लगे हैं। ऑनलाइन कोचिंग सेंटरों के माध्यम से बच्चों का मार्गदर्शन हो रहा है, और भविष्य सुधर रहा है। कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षकों ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ी भूमिका निभाई, और इससे बच्चों की पढ़ाई का नुकसान कम हुआ। ऑनलाइन शिक्षा सस्ती और सुविधाजनक है, और इसके माध्यम से हम विश्वभर के विभिन्न विषयों के माहिरों से नए अनुसंधान के संबंध में घर बैठे ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा, मोबाइल के माध्यम से हम दूरदराज के डॉक्टर से अपनी बीमारी के इलाज हेतु परामर्श ले सकते हैं। यह तकनीक हमारे शिक्षा जगत के साथ-साथ हमारे जीवन के नित्य कर्म में भी क्रांति ला दी है। साहित्य को समर्पित 'प्रान्ति इंडिया' का प्रस्तुत अंक आप सब को समर्पित करते हुए हमें जो हर्ष हो रहा है उसे हम शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर पा रहे हैं। जिन कवियों, कहानीकारों, लेखकों, साहित्यकारों और चित्रकारों ने हमें सहयोग दिया है और इस अंक की शोभा बढ़ाई है उन का हृदय से आभार। आप इस पत्रिका को आगे अपने साहित्यिक दोस्तों को भी प्रेषित करें ताकि वो भी अपने साहित्यिक कर्म के माध्यम से हमारी पत्रिका 'प्रान्ति इंडिया' के साथ जुड़ें और लाभ उठा सकें। हमारा यह प्रयास आप को कैसा लगा, आप अगर इस को अपने शब्दों में लिख कर भेजें तो हम प्रसन्न होंगे। इसकी प्रतीक्षा भी रहेगी। हम भी अपना वायदा याद रखेंगे। दीप जलाएंगे, तपाएंगे और सोना बनाएंगे!

संपादन मंडल के सदस्य डॉ. लेखराज की कलम से..!

आपके पत्र

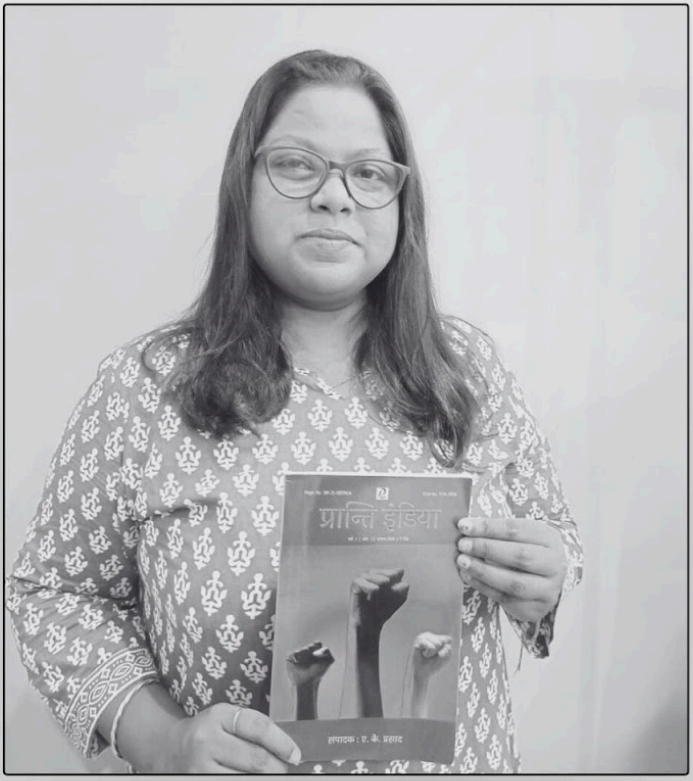

प्रान्ति इंडिया के अगस्त 2024 अंक को पढ़ने का अवसर मिला, जो देशभक्ति के भाव से भरपूर होने के साथ-साथ भाव प्रधान भी है। इसमें चित्रकला और रिश्तों की गरमाहट को दर्शाने वाली गद्य-पद्य रचनाओं का सुंदर संयोजन किया गया है। यह अंक न केवल नवोदित सर्जकों की प्रतिभा को प्रदर्शित करता है, बल्कि नई ऊर्जा को नई दिशा देने का काम भी करता है। इस अंक में विभिन्न विषयों पर विचारोत्तेजक और प्रभावशाली लेख हैं, जो पाठकों को सोचने और महसूस करने के लिए प्रेरित करते हैं। चित्रकला और सवाल-जवाब का संयोजन इस अंक को और भी आकर्षक बनाता है। मैं प्रान्ति इंडिया के कुशल संपादक महोदय और उनकी टीम के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं, जिन्होंने इस अंक को साकार करने में अपना योगदान दिया है। उनकी मेहनत और समर्पण से यह अंक एक अद्वितीय और यादगार बन गया है। मैं सभी रचनाकारों को अशेष शुभकामनाएं और प्रणति अर्पित करती हूं, जिन्होंने अपनी रचनाओं से इस अंक को समृद्ध बनाया है। उनकी प्रतिभा और उत्साह ने इस अंक को एक नए स्तर पर पहुंचाया है।

.

बिहार के गोपालगंज से इला कुमारी का पत्र..!

चित्रकारी

बिहार के पूर्वी चंपारण से पल्लवी श्रीवास्तव

बिहार के पूर्वी चंपारण से अमृता कुमारी

बिहार के कटिहार से महाश्वेता

आप अपनी चित्रकला कार्यालय में संपादक की eमेल editor@prantiindia.com पर भेज सकते है। साथ में मोबाइल नंबर, अपना पूरा पता व एक फोटो अवश्य भेजें। चयनित पेंटिंग को आपके नाम, पता व फोटो के साथ पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।

साक्षात्कार

डॉ. अनीता जठार एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने अपने जीवन को शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में समर्पित किया है। उनकी मेहनत, समर्पण और जुनून ने उन्हें एक सफल शिक्षाविद् और साहित्यकार बनाया है। उनकी यात्रा एक सच्ची मिसाल है कि कैसे एक व्यक्ति अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ सकता है।

शैक्षणिक योग्यता :

डॉ. अनीता जठार ने अपनी शैक्षणिक योग्यता में उत्कृष्टता प्राप्त की है, जिसमें बीए, बीएड, एमए, एमफिल और पीएचडी (हिंदी) शामिल हैं। उन्होंने यसीएमओयू से डिप्लोमा इन स्कूल मैनेजमेंट भी किया है। उनकी शैक्षणिक योग्यता और अनुभव ने उन्हें एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् बनाया है, जो अपने छात्रों को उच्चतम स्तर की शिक्षा प्रदान करने में सक्षम हैं। उनकी साहित्यिक योगदान ने उन्हें एक प्रतिभाशाली साहित्यकार के रूप में स्थापित किया है, जो अपने लेखन के माध्यम से समाज को प्रभावित करने में सक्षम हैं।

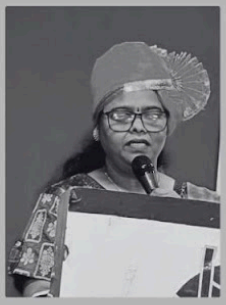

अनुभव :

डॉ. जठार के पास स्कूल और जूनियर कॉलेज में कुल १८ वर्षों का अनुभव है। उन्होंने एसएनडीटी कॉलेज में गेस्ट लेक्चरर के रूप में भी काम किया है और गुरुनानक जूनियर कॉलेज, गणेश पेठ, पुणे में लेक्चरर के रूप में काम किया है। डॉ. जठार की कहानी हमें यह सिखाती है कि सफलता केवल कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प से ही प्राप्त की जा सकती है। उनकी प्रतिबद्धता और जुनून ने उन्हें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद की है, और उनकी यात्रा एक सच्ची प्रेरणा है जो हमें अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है।

साहित्यिक योगदान :

डॉ. जठार एक प्रतिभाशाली साहित्यकार भी हैं। उन्होंने विभिन्न पत्रिकाओं और संग्रहों में अपनी कविताएं, लेख और कहानियां प्रकाशित की हैं। उन्होंने 'साहित्य शिरोमणि' सम्मान और 'आदर्श शिक्षक पुरस्कार' जैसे पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं। डॉ. अनीता जठार एक सच्ची प्रेरणा हैं, जो हमें यह सिखाती हैं कि कैसे हम अपने जीवन को अपने लक्ष्यों की दिशा में आगे बढ़ा सकते हैं। उनकी कहानी एक सच्ची मिसाल है कि कैसे एक व्यक्ति अपने सपनों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ सकता है।

निष्कर्ष :

डॉ. अनीता जठार एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने अपने जीवन को शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में समर्पित किया है। उनकी मेहनत, समर्पण और जुनून ने उन्हें एक सफल शिक्षाविद् और साहित्यकार बनाया है।

आपने लेखन कला का विकास कैसे किया ?

मैं आठवी कक्षा में थी तब से लिखना शुरू कर दिया था। स्कूल के समय से ही सांस्कृतिक कार्यक्रम में मैं हमेशा भाग लेती थी। इसमें दो -दो पंक्तियों की कविता हमेशा लिखा करती थी। कॉलेज में आने के बाद इसने और जोर पकड़ लिया। मुझे डायरी लिखने का शौक था लेकिन शादी के बाद यह आदत बंद हो गई। जिम्मेदारियां में इतना उलझी रही की क्या बताऊं। एक दिन बेटे ने कहा, "मां मुझे पाठशाला के मैगजीन के लिए मानवता या इंसान विषय पर कविता चाहिए। आप तो इतना कुछ कहते- लिखते रहते हो, जरा मेरे लिए भी एक कविता रच दो। तो मैंने "माणसा रे माणसा,माणसा सारख वाग" कविता लिखी। इसके बाद धीरे-धीरे फिर से मैं लिखने की और झुकने लगी। स्कूल में नौकरी करते समय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करना पड़ता था तथा कुछ कविताएं, संवाद, कहानी लेखन का कार्य करना शुरू किया और यह बढ़ता गया। मुझे लेखन के लिए ज्यादा व्यक्तिगत संघर्ष नहीं करना पड़ा, क्योंकि मेरे पति भी चाहते है कि मैं लेखन कार्य करूँ और ऐसे ही निरंतर लिखती रहूँ।

आपको किन साहित्यकारों ने प्रभावित किया ?

मैं प्रेमचंद जी के साहित्य से ज्यादा प्रभावित हूँ। प्रेमचंद जी का साहित्य आदर्श से यथार्थ की ओर जो बढ़ता हुआ दिखाई देता है। उसमें जीवन की कड़वी सच्चाई को साहित्य के माध्यम से उजागर किया है। साथ ही, मैं महिला लेखिकाओं से भी प्रभावित हूँ। इन लेखिकाओं में प्रभा खेतान की 'अन्य से अनन्या', अग्निहोत्री जी की 'लगता नहीं है दिल मेरा' कौशल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' और सुशील टाकभौरे जी की 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा मुझे ज्यादा प्रभावित करती है। इन आत्मकथाओं में जो दर्द, समाज के साथ-साथ अपनो से और अपने आपसे किया संघर्ष रोंगटे खड़े कर देता है। कौशल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' उसमें उन्होंने जाति और लड़की होने के दोहरे अभिशाप का जो वर्णन किया है। सुशील जी ने जाति-समाज के शिकंजे के बारे में लिखा है। तो प्रभा खेतान ने लिव इन रिलेशनशिप में रहने से कितनी परेशानियाँ झेलनी पड़ी तथा अपने आप को समाज की नजरों में ऊपर उठने के लिए कितनी कोशिश करनी पड़ी इसका वर्णन मिलता है। कृष्णा अग्निहोत्री का जीवन तो संघर्षों का सिलसिला ही है। आत्मकथाएं पड़ने पर लगा कि इनको कितनी यातनाएँ सहन करनी पड़ी, लेकिन इन्होनें हार नहीं मानी। अपने लिए नया रास्ता खोजती रही और जीवन व्यतीत करते हुए सफलता के शिखर पर पहुंच गए।

नवोदित साहित्यकार लिखते समय किस बात का ख्याल रखें ?

हर रोज कुछ ना कुछ लिखते जाओ और पढ़ते रहो। पढ़ने से हमारी भाषा समृद्ध होती है। शब्द संपदा बढ़ती है। एक शब्द के कई अर्थ होते हैं। हर शब्द की अर्थछटा अलग होती है। जब आप पढ़ोगे तो लेखन करते समय वह शब्द आपको याद आएंगे। जब हम दूसरे लेखकों का साहित्य पढ़ेंगे तो उनके अनुभव से समृद्ध होंगे। वह कृति पढ़ते समय हमारे मन में लेखन का एक बीज पनप सकता है और लेखन के लिए एक नया विषय मिल जाता है। साहित्य लेखन में आदर्श, सत्य, कल्पना, भाव, विचार, सौंदर्य इन बिंदुओं का मिला-जुला रूप होना चाहिए। साहित्य लेखन में सत्य आदर्श के साथ साथ कल्पना और सौंदर्य का भी सहारा लेना पड़ता है। साहित्य में सिर्फ कोरी कल्पना भी नहीं होनी चाहिए इसके साथ यथार्थ भी होना चाहिए। अत: नवोदित रचनाकारों को हमेशा कुछ ना कुछ पढ़ते रहना और कुछ न कुछ लिखते रहना चाहिए।

उत्तर प्रदेश के जौनपुर से अंकुर सिंह

हिंदी बने राष्ट्र भाषा

हमारा हो निज भाषा पर अधिकार,
प्रयोग हिंदी का, करें इसका विस्तार।
निज भाषा निज उन्नति का कारक,
निज भाषा से मिटे सभी का अंधकार।।

हिंदी है हिंदुस्तान की रानी,
हो रही अब सभी से बेगानी।
अन्य भाषा संग, हिंदी अपनाओ,
ताकि हिंदी संग ना हो बेमानी।।

माथे की शोभा बढ़ाती बिंदी,
निज भाषा जान हैं हिन्दी।
आओ मिल इसका करें विस्तार,
ताकि गर्व हमपर नई आबादी।।

हिंदी हम सब की हैं मातृ-भाषा,
छोड़ इसे ना करो तुम निराशा।
हिंदी बोलने में तुम मत शरमाओं,
ताकि हिंदी बने हमारी राष्ट्र भाषा।।

हिंदी हैं अपनी राजभाषा,
बनाना इसे अब राष्ट्रभाषा।
आओ निज भाषा से प्यार करें
ताकि हिंदी को ना मिले निराशा।।

महात्मा गांधी जी कहते थे,
हिंदी है जनमानस की भाषा ।
कहा उन्नीस सौं अठारह में बापू ने,
सब बनाओ हिंदी को राष्ट्र भाषा।।

पहली अंग्रेजी, फिर चीनी,
ज्यादा बोले जाने वाली है भाषा।
हर कार्य में हिंदी को अपनाकर,
बनाए इसको हम पहली भाषा।

झारखंड के धनबाद से पूनम लता

मैं एक शिक्षक हूं

हम शिक्षकों के लिए है गर्व की बात,
हमारे मार्गदर्शक थे महान।
पाँच सितंबर का शुभ दिन,
सर्वपल्ली गाँव में जन्म लिया एक लाल।
भारत को गौरवान्वित करने वाले,
थे वे डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन।
शिक्षा के क्षेत्र में देकर महा योगदान ,
शिक्षा के क्षेत्र में किया कई सुधार।
शिक्षकों के महत्व की पहचान बनाने,
अपने जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप मे मनाया।
सर्वप्रथम सुशोभित भारतरत्न से,
समाज में शिक्षकों के महत्व को दर्शाया।
कबीर तुलसी सभी ने गुरु की महिमा गाई,
आपने सच कर दिखाया गुरु की महिमा महान।
छात्र के जीवन पर पड़ता है,
गुरु के व्यक्तित्व का प्रभाव अपार।
गुरु,माता-पिता,सुजन,भगवान,
सभी हैं पूजन के पात्र।
इनमें गुरु का है सर्वोच्च स्थान,
जो होते सकल गुणों के खान।
डॉक्टर,इंजीनियर हो या हो वैज्ञानिक,
सभी को गढ़ता है शिक्षक।
राष्ट्र निर्माता बन छात्रों के
व्यक्तित्व का करते निर्माण।
धर्म कर्म प्रेम मानवता का पाठ पढ़ाकर,
छात्रों के लक्ष्य की पहचान कराते।
शिक्षक का दायित्व होता विस्तृत,
जिसे निभाना है शिक्षक की जिम्मेदारी।
इसे सिखाने वाले थे महान शिक्षाविद राधा कृष्णन।
मुझे गर्व है अपने शिक्षक होने पर ,
जब भी मैं होती कक्षा में भूल जाती मैं कौन हूँ।
नहीं रहता ध्यान अपने व्यक्तिगत जीवन का।
बस याद रहता है ,
कि मैं एक शिक्षक हूँ ।

उत्तर प्रदेश के नोएडा से सीमा चुघ

जीवन का आधार

माता-पिता हमें दे संस्कार
पर जो दिए की तरह जलकर
हम सबको देते हैं ज्ञान का भंडार
मिला है उनको शिक्षक नाम
वो है हमारे जीवन का आधार
आओ हम सब करें उन्हें प्रणाम ।।

शिक्षको ने ही हमें
स्नेह, संस्कार, समर्पण
रूपी खजाना देकर
हमारे जीवन को सुंदर बनाया
अनुशासन का पाठ पढ़ाकर
भले बुरे का ज्ञान कराया
सच्चाई और न्याय के
पथ पर चलना सिखाया
अहंकार से दूर रहकर
सेवा व संयम का पाठ पढ़ाया
शिक्षक है जीवन का आधार
आओ हम सब करें उन्हें प्रणाम।।

शिक्षक ही हमारे जीवन में
शिक्षा की ज्योत जलाकर
वाणी को सुसभ्य बनाता
हमारे जीवन में
ज्ञान का संचार कराता
संघर्षों के पथ पर
चलने का हौसला दिलाता
धैर्यवान होकर जीवन
जीने की कला सिखाता
शिक्षक है जीवन का आधार
आओ हम सब करें उन्हें प्रणाम।।

शिक्षक ही हमारे मन में सद्विचार
भरकर दुखों का नाश कराता
दिव्य ज्ञान की ज्योत से
हमारा साक्षात्कार कराता
शिक्षक की महिमा है अपरंपार
ऐसे शिक्षक के चरणों में
वंदन करूं मैं बारंबार
वो है हमारे जीवन का आधार
आओ सब मिलकर करें उन्हें प्रणाम।।

उत्तर प्रदेश के नोएडा से भोला शरण प्रसाद

मार्गदर्शक

शिक्षक शब्द का निर्माण हुआ,
शिक्षक शिक्षा के दाता हैं,
कलम जिसके हाथ में,
वही भाग्य विधाता है,
वो ज्ञान दोष की ज्योति जलाएं,
भाग्य विधाता बन,
अनपढ़ को ज्ञानी बनाएं,
शिक्षित करना कोई खेल नहीं,
सही दिशा का संचालन है,
मार्ग दर्शक हैं गुरु- शिक्षा के,
माता- पिता प्रति पालन हैं।
कलम की पूजा करते,
सबके लिए राह बनाते,
खुद जीते सादा जीवन,
सबको मार्ग दिखलाते हैं,
माता -पिता से कोई तुलना नहीं,
फिर भी सर्वोच्च स्थान पाते हैं,
शिक्षक दिवस को पर्व बतलाते हैं।
शिक्षा और साक्षरता को,
अज्ञानी को ज्ञानी बना दे,
वो महा ज्ञानी शिक्षक कहलाते हैं।
'भोला शरण' नतमस्तक है,
हर शिक्षक के सामने।
शिक्षित ही कर सकता शिक्षित,
शिक्षक को दो सर्वोच्च सम्मान,
जब सर झुकेगा शिक्षक का,
नहीं होगा जग का कल्याण।

उत्तर प्रदेश के जौनपुर से अंकुर सिंह

शिक्षक महान

प्रणाम उस मानुष तन को,
शिक्षा जिससे हमने पाया।
माता पिता के बाद हमपर,
उनकी है प्रेम मधुर छाया।।

नमन करता उन गुरुवर को,
शिक्षा दें मुझे सफल बनाए।।
अच्छे बुरे का फर्क बता,
उन्नति का सफल राह दिखाए।।

शिक्षक अध्यापक गुरु जैसें,
नाम अनेकों मानुष तन के,
कभी भय, कभी प्यार जता,
हमें जीवन की राह दिखाते।।

कभी भय, कभी फटकार कर,
कुम्हार भांति रोज़ पकाते।
लगन और अथक मेहनत से,
शिक्षक हमें सर्वश्रेष्ठ बनाते।

कहलाते है शिक्षक जग में,
ब्रह्मा, विष्णु, महेश से महान।
मिली शिक्षक से शिक्षा हमें
जग में दिलाती खूब सम्मान।।

शिक्षा बिना तो मानव जीवन,
दुर्गम, पीड़ित और बेकार।
गुरुवर ने हमें शिक्षा देकर,
हमपर कर दी बहुत उपकार।।

अपने शिष्य को सफल देख,
प्रफुल्लित होता शिक्षक मन।
अपने गुणिजन गुरुवर को मैं,
अर्पित करता श्रद्धा सुमन।।

ओडिशा के झारसुगुड़ा से पी. यादव 'ओज'

हे गुरुदेव!

गुरु जैसे कल्पवृक्ष,
आदरणीय,वंदनीय,पूजनीय....!
गुरु जैसे संजीवनी,
प्राणदायिनी,अनुकरणीय।

हे गुरुदेव! हे कृपासिंधु!
कैसे मैं गुणगान करूं?
साक्षात आप ज्ञानमूर्ति,
चरण आपके शीश धरूं।।

दैदीप्त ओजमय आप,मैं निरीह बाती।
आप प्रकाशपुंज,मैं अंधकार अर्धरात्रि।।
आपकी दिव्यता का,मैं क्या बखान करूं,
चरण में आपके,दीप बन मैं जलता रहूं।।

ज्ञान के सागर हैं आप,
मैं निरा-घोर अज्ञानी।
सौम्यता से परिपूर्ण आप,
मैं मलीन,दंभी,अहंकारी।।

रास्ते आपके ही बताएं,निश-दिन मैं चला।
ठोकरों से सीख-सीख,जिंदगी में आगे बढ़ा।।
राह की मशाल बन,संग-संग हो आप चले,
पाकर आपकी ही रोशनी,बढ़ा मैं आगे बढ़ा।।

भंवर में नाव फंसी जब-जब,
दिया आपने ही मुझे सहारा।
आप बनकर खेवनहार मेरा,
लगाया मेरी नाव को किनारा।।

धरती-गगन,फूल-उपवन,अग्नि-नीर धूलकण में,
दिशा-दिशा स्वरूप आपका,ऊषा स्वर्ण किरण में।
जल रहा है ज्योत आपका,पल-पल मेरे जीवन में,
अमावस-सा दुर्भाग्य मेरा,बदला सौभाग्य पूनम में।।

हे गुरुदेव!आप मेरे जीवनदाता,
आप ही मेरे भाग्य के निर्माता।
करूं-करूं,सदा मैं वंदना करूं,
जीवन मेरा,आज समर्पण करूं।।

असम के तिनसुकिया से नेहा चौरसिया

कण-कण में गुरु

गुरु बिन यह जग सूना
मेरे अंतर्मन का कण-कण सूना।
पहली गुरु मां होती है
बचपन में ही संस्कारों की शिक्षा देती है,
दूसरे गुरु अनुशासन सिखाते
वक्त की अहमियत को बतलाते,
तीसरा गुरु है सबसे ऊपर
जीवन के चंद पन्नों में जिंदगी जीना सिखाते हैं,
पहले परीक्षा फिर सीख
ऐसे ज्ञान बरसाते है,
गुरु बिन यह जग सूना
मेरे अंतर्मन का कण-कण सूना।
ठोकरे खाई जब-जब मैंने
संभाला गुरु आपने,
हमारी जीत में आपकी जीत
कहते सुना हर बात में,
कभी न मानना हार,
मेरे अंतर्मन का कण-कण सूना।
किसी को डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, वैज्ञानिक बनाया
कभी किसी बच्चे को मौत के मुख से बचाया,
हौसला कभी ना गिरने दिया
बुलंदियों को छुने का अवसर दिया,
परिस्थितियां कितनी भी मुश्किल हो
जब तक हो थोड़ी भी हिम्मत,
बना लेना तुम अपनी नई किस्मत
रच देना इतिहास,
मेरे गुरु को है मुझ पर विश्वास,
गुरु बिन यह जग सूना
मेरे अंतर्मन का कण-कण सूना।
डगमगाया कभी तो संभाला आपने,
भटका कभी राह दिखाया आपने,
हार मानना ना सिखाया आपने,
डरो ना कभी, डटे रहो
गुरु पथ पर चलते रहो,
एक कल, होगा कल
मंजिल चूमेगी तुम्हारे कदम,
मैंने अपने गुरु से कुछ ऐसी शिक्षा पाई है,
भटकों को राह दिखाना पर
राह दिखाते-दिखाते खुद भटक ना जाना,
गुरु बिन यह जग सूना
मेरे अंतर्मन का कण-कण सूना।।

राजस्थान के बीकानेर से पुनीत कुमार रंगा

गुरू ज्ञान की मूरत

तम से उजास पथ आपने दिखाया
जीने का सलीका आपने सिखाया।

मुश्किलों के हल भी आपने बताये
जीवन के फलसफे आपने सिखाये।

अंधेरा भगा उजाला आपने दिखाया
व्यक्तित्व और कृतित्व भी आपने बनाया।

मेरे कर्म ही पहचान-वो ही मेरी सूरत
ऐसा पाठ पढ़ाने वाले गुरू ज्ञान की मूरत।

झारखंड के बोकारो से राजीव कुमार

शिक्षक

ज्ञान है तीर
शिक्षक तरकश
ज्ञान कमान
रखते शिक्षक|

भेदे नहीं कोई अंग
भेदे मस्तिष्क का तम
विद्यार्थी दुविधा का मर्म
समझना शिक्षक धर्म|

अपनी-अपने क्षेत्र विजेता
शिक्षक ही बनाते विद्यार्थी को प्रणेता

महाराष्ट्र के पुणे से अच्युत उमर्जी

सनातन धर्म

पता नहीं कब से...
सनातन धर्म का आरंभ हुआ...
हाल में जो देश में चल रहा है...
हर कोई विपक्ष का नेता...
सनातन धर्म को खत्म करने की बात कर रहा है...
हमने देवी देवताओं को पूजा...
मूर्तियां तोड़ दिये गये...
मंदिरों को तोड दिया गया...
कितने ही जन सुबह...
सूर्य को पूजते हैं...
चांद को पूजा जाता है...
जल को पूजा जाता है...
अग्नि को पूजा जाता है...
वृक्षों की पूजा करता हूं...
पर्वतों की पूजा करता हूं...
माता पिता को पूजा जाता है...
जो बात करते हैं सनातन धर्म को खत्म करने की...
क्या वह...
सूर्य की रोशनी मिटा सकते हैं...
चांद को हटा दें...
जल को सुखा दे...
अग्नि को बुझा दे...
वृक्षों को काट दे...
पर्वतों को हिला दें...
पिता का नाम मिटा दें...
हिम्मत है तो यह सब कर के दिखा दे...
सनातन धर्म अनंत है...
यह युगों तक चलेगा...
सनातन धर्म को मिटाना आसान नहीं...।

गुजरात के राजकोट से सोनल मंजू श्री ओमर

श्री गणेश

हमारे ईष्ट श्री गणेश प्रथम पूज्य आप है।
दूर करते सभी विघ्न, क्लेश, सन्ताप है।
एकदंत, सुंदर कानन, मोदकप्रिया आप है।
माता पार्वती, पिता महादेव नन्दन आप है।
पधारे रिद्धि सिद्धि पत्नियों संग आप है।
शुभ, लाभ के पिता जगत पालनहार आप है।
गजकर्ण में व्याप्त वैदिक ज्ञान भी आप है।
सूंड में धर्म और आँखों का लक्ष्य भी आप है।
बाएं हाथ का अन्न, दाएं का वरदान आप है।
पेट में सुख समृद्धि नाभि का ब्रह्मांड आप है।
मस्तक में ब्रह्मलोक चरणों में सप्तलोक आप है।
भक्तों को प्रदान करते सुख, समृद्धि, प्रताप है।
सुखकर्ता, दुखहर्ता, विघ्न विनाशक आप है।
सँसार के दूर करते आप सभी अनिष्ट, पाप है।

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर से बद्री प्रसाद वर्मा

आजादी का पर्व

आया आया फिर देखो
आजादी का पर्व।
आओ आज मनाएं
अपना स्वाधीनत पर्व।

देश हुआ आजाद मेरा
अंग्रेजो से भाई।
आजादी के लिए लड़ी
वीरों ने खूब लड़ाई ।

कितने वीर सपुतों ने
अपना खून बहाया।
तब जाकर हमने
अपनी आजादी को पाया।

गुलामी से हमको गांधी ने
छुटकारा अंग्रेजो से दिलवाया।
गांधी जी का सत्याग्रह
भारत माता के काम आया।

भगत सिंह सरदार पटेल
वीर अब्दुल हमीद भाई।
तात्या टोपे चंद्रशेखर ने
अंग्रेजों से आजादी दिलवाई।

आज तिरंगा आसमान में
आजादी का जश्न मना रहा है।
घर घर में आज तिरंगा
आज खूब लहरा रहा है।

दिल्ली से रवि ऋषि

लोग

नहीं कहीं जो बंधकर रहते मनमौजी मतवारे लोग
सबसे ज़्यादा तो ठहरे होते हैं ये बंजारे लोग

भीख मांगने वाले होते नहीं यहां पे सारे लोग
रस्तों में यूं भी मिलते हैं तनहाई के मारे लोग

ये भी तो हो सकता है हालात वहां ले आए हों
काजल की कोठरियों में भी होते हैं उजियारे लोग

महलों में रहने वालों को अक्सर याद नहीं रहता
उनकी खातिर हो जाते हैं ईंटें मिट्टी गारे लोग

जो डूबे लहरों में उनमें से कुछ बच भी सकते थे
पर तस्वीरें खींच रहे थे जो थे खड़े किनारे लोग

हम उनके उस नफ़रत वाले ख़ेमे में न जा पाए
जाने कैसे कैसे हमको करते रहे इशारे लोग

सारे एक तरह के हों तो लुत्फ़ कहां रह जायेगा
शायद इसीलिए मिलते हैं कड़वे मीठे खारे लोग

दुनिया चाहे गोल सही पर हमने तो ये देखा है
कोने कोने में मिलते हैं कितने प्यारे प्यारे लोग

उत्तर प्रदेश से डॉ. विनीत विद्यार्थी

मानव

भूल गया एहसान
तन धर इस धरती पर आया भूल गया एहसान।
अरे ओ मानव कैसे हो तेरा कल्यान।
लख चौरासी भटका
कर्मों के भंवर में अटका
मानव तन पाकर तू भूल गया भगवान।
व्यर्थ कर्मों में समय गवाया
जीवन रस को यूं ही लुटाया।
बासना में पढ़कर तू प्रभू से हुआ अन्जान
बातें ज्ञान की तू करता।
क्रोध बासना में तू रहता।
प्रेम की वाणी को भूला अब बनता तू नादान।
हरी भजन को जाना नहीं
दरिद्र को हरी में पहचाना नहीं
अपने कर्मों को देखकर क्यों होता परेशान।

उत्तर प्रदेश के चित्रकूट से डॉ. सतीश 'बब्बा'

मां

मां न गोरी होती है,
मां न कारी होती है,
मां न अच्छी न बुरी होती है,
मां तो मां होती है!

मां पर हम बच्चों का,
पूरा अधिकार होता है,
मां के हाथों में जादू होता है,
मां तो मां होती है!

मां बिना बताए ही,
जान जाती है पहचान जाती है,
गलत रास्ते पर जाने नहीं देती है,
मां तो मां होती है!

वह पानी वाले पनडुब्बे,
मां के हाथ से बने होते,
नून रोटी स्वाद में बेजोड़ होती है,
मां तो मां होती है!

खुद गीले में सोती है,
अपनी छाती में बच्चे को सुलाती है,
प्यार में मां अलग होती है,
मां तो मां होती है!

मां न छोटी होती है,
मां न बड़ी होती है,
मां सबसे अलग होती है,
मां तो मां होती है!!

उत्तर प्रदेश के लखनऊ से सुभाष चन्द्रा

दरिया अब शांत है

बड़ी मुश्किल से
भंवरों से मुक्त हुआ तो
लहरों ने ला पटका
विराने में
तन भी घायल मन भी घायल
काटा कीट पतंगों ने

दरिया अब शांत है
सड़कें टूटी दरके हैं पहाड़
लाशों का अम्बार है
चील, कौओं, लोमड़ी और सियार
हैं प्रसन्न आज पाकर अपना
भोजन और शिकार

जीवन ऐसे ही गुजरता है
प्राकृतिक आपदाओं से
झूझने के पश्चात
आदमी का मन और तन
कठोर हो जाता है

शुरू होती है नई जिंदगी
सारा पुरुषार्थ इकट्ठा कर
कवि तो सिर्फ कल्पना
करता है कि
बसुन्धरा हरी भरी हो
सुख समृद्धि का राज हो
प्यारा सा संसार हो ।

दिल्ली से सीमा तोमर

रार

अक्सर भीतर ही भीतर
कुछ दरक जाता है
सुलगता है कुछ
धुआं-धुआं हो जाता है
इस धुंए में घुटती है सांसे
जलता है मन
दुखती है शिराये
बिखरता अस्तित्व क्षण-क्षण
स्वयं को ही मन उठता धिक्कार
अपनी ही सांसे लगती उधार
अपनें से अपनी ही
छिड़ती है 'रार'
और इस भीतरी तकरार में
खुद से खुद की 'रार' में
बचती है राख
केवल राख
लेकिन राख में भी
दबी चिंगारी है
मर मर के भी जो जी जाए
वही तो नारी है

बिहार के गोपालगंज से इला कुमारी

टूटना

मेरे हाथों से बहुत कुछ,
छुट रहा था, टुट रहा था,
क्योंकि सबसे अलग था,
वह, जो मेरे अंदर पल रहा था,
मेरे ठीक सामने था आकाश,
जो प्रतिक्षण अपना रंग बदल रहा था,
उन पर बन जा रही थी आकृतियां,
उभर आए थे बादलों के पहाड़,
और पहाड़ के नीचे बहने लगी थी,
पतली सी नदी,
पहाड़ के हृदय में,
नदी का समा जाना,
और कुछ क्षण के बाद,
उन सबका मेरे हृदय में बनकर,
धूमिल हो जाना,
प्रेम की वास्तविकता में,
कई कई चेहरे का उभर आना,
फिर धूमिल हो जाना,
सब कुछ बनकर, टुटकर, पिघलकर ,
भाप बनकर उड़ जाना,
और शेष बच जाना शून्यकाय,
सफेद अकेला आकाश।

मध्य प्रदेश के सिलोदा से आनंद सिसोदिया

प्रलय

सिंचित धारा सी नदी हूँ मैं कब "प्रलय "बन जाऊ तुमको ये एहसास नहीं

प्रकृति से मिटा यौवन की एक-एक छटा " बसंत बहार, मेरे पास नहीं,,
कब प्रलय का आकाश मै लाउ तुमको ये एहसास नहीं

है गोद मे क्षरण प्रदूषण से दबी है हर सांस क्यों मेरी,
कब प्रलय का आकाश मैं लाउ तुमको ये एहसास नहीं

हां तुमको ये एहसास नहीं!

अभी तो सिर्फ उत्तराखंड वायनाड हूँ,
मै तेरी हस्ती-कस्ती डूबा दू, क्या तुझको ये एहसास नहीं,,,

राजस्थान के सोजत सिटी से डॉ. रशीद ग़ौरी

अभिलाषा: एक फूल

चौराहे पर लाल बत्ती के होते ही ड्राइवर ने कार रोक दी। तभी, कार के बंद शीशे पर ठक-ठक की आवाज हुई। कार की पिछली सीट पर बैठे शर्मा जी ने देखा। बाहर एक नन्ही सी लड़की खड़ी थी। जिसकी गोद में एक दूध पीती बच्ची जो करीब-करीब लटकने की हालत में चिपकी हुई थी। उसके एक हाथ में प्लास्टिक के बने गुलाब के फूल और कुछ वन्हीं कलियां थीं। जो दिखने में बहुत खूबसूरत लग रही थीं।

शर्मा जी ने शीशे को नीचे किया।

" साब... दस रुपये का एक है... एक ले लीजिए... इसमें खसबू भी है...सूंघकर देखो...।"

शर्मा जी कुछ बोलते उससे पहले लड़की ने झट से फूलों का वह गुच्छा उनकी नाक के आगे कर दिया। वाकई उसमें गुलाब की खुशबू थी।

" ठीक है... ठीक है...चल, एक दे दो...।" शर्मा जी ने दस रुपये का नोट पकड़ाते हुए गुलाब के उस नकली फूल और कली को खरीद लिया। वह गरीब लड़की खुश हो गई। उसकी खुशी उसके भोले मासूम चेहरे पर साफ झलक रही थी।

" अरे, सुन... तू पढ़ने नहीं जाती...?" अकस्मात ही शर्मा जी के भीतर का शिक्षक जाग उठा। वे एक शिक्षक थे।

" साब...क्या करें...! उधर देखिए...वो मेरी मां उस बिल्डिंग में ईंटें उठाने का काम करती है... मजदूरी करती है...और मुझे मेरी इस छोटी बहन को रखना पड़ता है... मैं भी सूरज छुपने तक ये फूल बेचकर कुछ कमा लेती हूं... साब, मैं भी पढ़ना चाहती हूं... सच्ची...साब...मैं पढ़ना चाहती हूं... मैं भी...।"

तभी, सिग्नल वाली लाल बत्ती हरी हो गई। ड्राइवर ने कार को एक झटके से आगे बढ़ा दिया।

' साब...मैं भी पढ़ना चाहती हूं... सच्ची साब... सच्ची...।' शिक्षक शर्माजी के कानों में उस गरीब लड़की के शब्द घुसते चले गए...उसकी मासूम अभिलाषा वहीं चौराहे पर ही प्रदूषित हवा में दम तोड़कर रह गई...। सामने, एक तरफ सड़क किनारे शान से खड़े एक बड़े से होर्डिंग 'बेटी पढ़ाओ-बेटी बचाओ' के संदेश पर नज़र पड़ते ही शर्माजी के मन-मस्तिष्क में अजीब अन्तर्द्वंद्व उठ खड़ा हुआ।

वहीं शर्माजी के हाथ में भीनी-भीनी खुशबू देता गुलाब का सुर्ख नकली फूल मानों उनकी ओर देखते हुए मुस्करा रहा था।

मुम्बई से गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'

एक नई सीख

शहर के एक प्रतिष्ठित ५० वर्षीय शिक्षक अपने ८५ वर्ष की आयु के पूर्व शिक्षक के बारे में ज्ञात होते ही, बिना विलम्ब किये उनसे मिलने के साथ-साथ कृतज्ञता ज्ञापित करने, उनके निवास पर जा पहुँचे।

लेकिन वृद्ध शिक्षक महोदय उन्हें पहचान ही नहीं पाये। फिर भी प्यार से बैठाया और पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा... "याददाश्त कमजोर हो रही है और ऊपर से स्पष्ट दिखता भी नहीं.. खैर.. बताओ तुम्हारा क्या नाम है? क्या करते हो, कैसे आना हुआ ?"

उसने अपना नाम बताते हुये कहा- "सर, जिस दिन आपने मेरी लाज बचायी थी, उसी दिन मैंने आप जैसा शिक्षक बनने का निर्णय कर लिया था और सर, अब मैं भी आपकी ही तरह शिक्षक बन गया हूँ।"

"ओह ! अच्छा.. 'वाह' यह तो अच्छी बात है। लेकिन मैंने तुम्हारी लाज कब और कैसे बचायी.. वह बात कुछ स्मृति में नहीं आ रही।"

फिर उनको याद दिलाते हुये उसने बताया.. "सर, जब मैं ग्यारहवीं कक्षा में था तब हमारी कक्षा में चोरी की एक घटना घटी थी.. उसमें आपने मुझे बचाया था।"

"कौन सी घटना, थोड़ा विस्तार से बताओ, शायद याद आ जाय।"

"ठीक है सर, मैं आपको याद दिलाता हूँ..! आपको मैं भी याद आ जाऊँगा।"

"सर, उस समय हमारी कक्षा में एक बहुत अमीर लड़का पढ़ता था.. और उसकी महँगी घड़ी जो वह पहनकर आता था, उस दिन चोरी हो गयी थी ..कुछ याद आया सर ?"

"ग्यारहवीं कक्षा... ???"

"हाँ सर.. उस दिन नाश्ते वाले समय के पहले मैंने देखा वह अपनी घड़ी पेंसिल वाले डिब्बे में रख रहा है तब मैंने मौका देख, वह घड़ी चुरा ली थी।"

उसके बाद जब आप कक्षा लेने आये, तब उसने आपसे चोरी की शिकायत की। तब आपने कहा था कि "जिसने भी वह घड़ी चुराई है, उसे वापस कर दे, मैं उसे सजा नही दूँगा।" लेकिन डर के मारे, मेरी हिम्मत ही नहीं हुई।

फिर आपने कक्षा का दरवाजा बन्द कर हम सबके साथ-साथ उस छात्र को भी आँखें मूँद कतार बना खड़े होने को कहा और यह भी कहा कि आप सबकी जेबें देखेंगे। "लेकिन जब तक घड़ी नहीं मिल जाती तब तक कोई भी अपनी आँखें नहीं खोलेगा, वरना उसे स्कूल से निकाल दिया जाएगा।"

हम सब आँखें बन्द कर खड़े हो गए थे। आप एक-एक कर सबकी जेबें देख रहे थे। जब आप मेरे पास आये, तो मेरे दिल की धड़कन काफी तेज हो गई..! लेकिन मेरे जेब में घड़ी मिलने के बाद भी आप कतार में खड़े अन्य सभी की जेबों को भी टटोलते रहे और जब सब की जेबें टटोल लीं.. तब घड़ी उस लड़के को वापस देते हुए बोले थे "अब कभी ऐसी घड़ी पहनकर स्कूल नहीं आना और जिसने भी यह चोरी की थी, वह दोबारा ऐसा काम कभी न करे".. इतना कहकर आप फिर हमेशा की तरह पढ़ाने लग गये थे..! कहते-कहते उसकी आँखें भर आई।

उसने भावुक हो रुँधे गले से कृतज्ञता जताते हुवे कहा - "आपने मुझे सबके सामने शर्मिंदा होने से बचा ही नहीं लिया, बल्कि अन्त तक मेरा चोर होना जाहिर नहीं होने दिया।" आपके इसी कृत्य ने मुझे आप जैसा शिक्षक बनने के लिये प्रेरित किया।

इतना सब सुनने के बाद उस वृद्ध शिक्षक ने कहा - "हाँ हाँ... मुझे याद आ गया।" उनकी आँखों में चमक आ गयी।

उन्होंने आगे बताया "बेटा... मैं भी आजतक नहीं जानता था कि वह चोरी किसने की थी, क्योंकि...जब मैं तुम सबकी जेबें देख रहा था, तब मैंने भी अपनी आँखें बंद कर रखी थीं क्योंकि मैं जानना भी नहीं चाहता था कि चोर कौन है!"

यह जानकर वह अचम्भित होकर गुरूजी के चरणों में गिर गया और वन्दना करते हुए कहा -

"गुरुजी आज फिर आपसे जिन्दगी का एक और पाठ सीख कर जा रहा हूँ..."

लौटते समय उसके मन-मस्तिष्क पर सन्त कबीरजी का निम्न दोहा छाया हुआ था -

गुरु पारस को अन्तरो, जानत हैं सब सन्त।
वह लोहा कंचन करे, ये करि लये महन्त॥

पंजाब के बठिंडा से स्नेह गोस्वामी

निः स्वार्थ

उनका नाम था कृष्णा। कृष्णा जी। लोगों के लिए वे कृष्णा आर्या जी थी। उन्हें कृष्णा नाम से शायद ही किसी ने पुकारा हो। सब उन्हें आर्या जी ही कहते पर मेरी वे दीदी थी। इसी संबोधन से मैं उन्हे पुकारा करती थी। मैं ही क्या मेरे विद्यालय की सभी छात्राएं उन्हें दीदी ही कहती। वे मेरी अध्यापिका थी। हिंदी पढाती। वह भी बड़ी कक्षाओं को। दसवीं ग्यारहवी बारहवीं तीनों कक्षाओं में मैंने हिंदी उन्हीं से पढी। सरल , सौम्य, मितभाषी। बिलकुल सादी वेशभूषा। पूरी बाँह का ढीला सा ब्लाउज जिसका गला ऊपर गर्दन को छू रहा होता। बार्डर वाली सूती सफेद साडी, जिसका बार्डर कभी लाल होता, कभी पीला तो कभी जामुनी। बार्डर का रंग तो बदल जाता पर साडी वही रहती, उसी तरह बिना प्रैस की हुई, मुड़ी तुड़ी, बिखरी सी। हाथों में मीना उड़ी लाल रंग की दो दो चूड़ियां। माथे पर सिंदूर की छोटी सी बिंदी। न आंख में काजल न होठों पर लिपस्टिक। तांबे से मिलता जुलता कालेपन को छूता हुआ रंग। काले और सफेद रंग के बाल मानो किसी ने उड़द की दाल में मुट्ठी भर चावल डाल दिए हो । खिचड़ी बालों को कस कर लपेट कर जूड़ा जैसा कुछ बना कर दो सुइयां खोस लेती तो चेहरा और भी रोबदार लगता। हालात ने उन्हें उम्र से पहले बूढा बना दिया था। उम्र चालीस के आसपास रही होगी पर देख कर कोई भी उन्हें पचपन का मान सकता था। चेहरा और वेशभूषा देख कर कोई अंदाज भी न लगा पाता कि उन्होंने ढेर सारी डिग्रियां ली हुई हैं। उनके दो बेटे थे। एक आठ नौ साल का और दूसरा शायद ग्यारह बारह साल का। छोटा तीसरी में और बडा बेटा छठी में। इसका पता भी हमें तब लगा जब स्कूल में किसी उत्सव में वे सम्मिलित होने के लिए आए। हमारी हैरानी की कोई हद न रही। इस हिसाब से तो उनकी उम्र चालीस से भी कम की रही होगी। हम जब छोटी कक्षाओं में थे तो उनके सामने जाते हुए बहुत डरते थे। अगर कभी वे हमें बुला लेती तो हमारी घिग्गी बंध जाती पर जब वे हमें पढाने लगी तब जाना कि ये तो ऊपर से नारियल जैसी कड़क हैं , अंदर से गरी जैसी मीठी और नरम। आँखें बंद कर जब वे पढाना शुरू करती तो अधिकांश छात्राएं मंत्रमुग्ध हो सुनती रहती । सिलेबस की सभी कवितायें उन्हें कंठस्थ थी। सारे पाठ मुँह जबानी रटे हुए थे। व्याकरण उनकी जीभ की नोक पर धरा था। उन्हें सुनते हुए हम हैरान हो उनका चेहरा देखते रहते। अगर सरस्वती इस धरती पर उतर आएं तो बिल्कुल उन जैसी ही दिखाई दें अलबत्ता उनकी साडी प्रैस की हुई, कलफ लगी होगी। कोई प्रश्न ऐसा न था जिसका उत्तर उन्हें पता न हो। हम बार बार सवाल पूछते, वे धैर्य से उनका उत्तर देती। कभी किसी सवाल पर अधीर या परेशान होते मैंने उन्हें नहीं देखा। किसी विषय को जितनी बार मर्जी पूछो, हर बार समझाती। देखने में एकदम कडक पर सब बच्चों की मदद करते भी मैंने उन्हें देखा था। थोडा बड़े हुए तो एक दिन बातों बातों में किसी ने बताया कि वे बनारस के किसी नामी वकील की चार बेटियों में से दूसरे नम्बर की बेटी थी। वकील साहब के पास पैसे और प्रतिष्ठा की कोई कमी न थी। शहर के नामी वकील थे। लक्ष्मी उनके आगे पीछे दौड़ती। शाही ठाठबाठ से उनका पालनपोषण हुआ। सही समय पर शादी हुई वह भी पूरे धूमधाम से। उनके पति अपने माता पिता की इकलौती संतान थे । जिस जमाने में कोई पांचवीं पास न करता था । दसवीं तक तो पूरे शहर में गिने चुने लोग हुआ करते थे , उस जमाने में वे मैथ्स में पी एच डी थे और डिग्री कालेज में व्याख्याता। जिंदगी ठीकठाक चल रही थी पर मैथ के सवाल हल करते करते एक दिन वे दिमागी संतुलन गंवा बैठे। अब शहर की सडकों में भटकते हुए किसी गली में बैठे हाथ में कच्चा कोयला या पत्थर थामे जमीन पर गणित की पहेलियाँ हल किया करते हैं। स्कूल से घर लौटते ही वे ढूंढने निकलती हैं और तलाश कर घर ले आती हैं। मायके और ससुराल के बहुत से लोगों ने समझाया कि तलाक लेकर नया घर बसा लो पर उन्होंने नहीं माना। बी टी सी की और बच्चों की परवरिश के लिए इंटर कालेज में नौकरी कर ली। उससे अपना और पति का गुजारा करने लगी। सुबह पति और बच्चों को नहला धुला खिला पिला कर कालेज के लिए निकलती हैं और वहाँ से छूटते ही पति को खोजने निकल पड़ती है और ढूढ़ कर जैसे तैसे घर लाकर नहलाना, खिलाना, सुलाना सब पूरी ईमानदारी से सारी जिन्दगी निभाया उन्होंने, बिना किसी आशा के , बिना किसी स्वार्थ के, सुन कर मन श्रद्धा से भर उठा। सीता सावित्री और सुलभा जैसी सतियों की कहानियां सुनी थी पर इनसे बढ कर कौन पतिव्रता होगी।

उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद से प्रमोद झा

अहमियत

सालों पहले मशहूर शो कौन बनेगा करोड़पति में हाट शीट पर बैठे बिहार के चर्चित आनंद कुमार सर से बहुत बढ़िया अंदाज में अमिताभ बच्चन अहम सवाल करते हैं और आनंद सही सही जवाब भी देते हैं। स्टूडेंट्स के लिए बेहतरीन सीखने वाली प्रक्रियाओं पर अमिताभ बात करते हैं। यहां खास ये है कि विद्यार्थियों के लिए आनंद सर सरीखे शिक्षक ही शैक्षणिक प्रगति को मजबूत आयाम देते हैं। इस महत्वपूर्ण विषय को ध्यान में रखते हुए ही बालीवुड में सुपर 30 जैसी मूवी बनी और आनंद सर की भूमिका में अभिनेता ऋतिक रोशन ने असरदार किरदार निभाया। दर्शकों ने फिल्म की सराहना की।

बिहार में अभाव ग्रस्त आनंद कुमार ने अपनी प्रतिभा को खासा तराशा और कोचिंग सेंटर खोल कर आईआईटी प्रवेश परीक्षा की तैयारी करने वाले बहुत से साधनहीन विद्यार्थियों का सफल मार्गदर्शन किया। गौरतलब बात है कि आनंद को कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में दाखिला मिल गया था लेकिन घर की तंगहाली के चलते वो एडमिशन लेने में नाकाम रहे थे।

आज भी साधनहीनता के कारण अधिकतर बच्चे बड़े स्कूलों में पढ नहीं सकते। ये एक बड़ी समस्या है और विसंगति यह भी है कि बच्चों को योग्य शिक्षक और बढिया विषय विशेषज्ञ नहीं मिल पाते। गणितज्ञ आनंद कुमार जैसे शिक्षकों की बड़ी अहमियत है।

विद्यार्थियों की सफलता के लिए विभिन्न कारक जिम्मेदार होते हैं और सही शिक्षक और अभिभावक ही इनका निरीक्षण करते हैं और सही प्रक्रिया अपनाते हैं। सचेत और कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक और विशेषज्ञों की कमी होती है तो बच्चों पर खासा असर पड़ता है, नम्बर कम आते हैं और हीनता और कुंठा बोध भी होता है।

दरअसल सही सोच, विचार और मानसिकता का विकास तभी होता है जब शिक्षकों की भूमिका का सम्यक निर्वाह हो। कैसे पढने में हैं बच्चे, क्या कमियां और कमजोरियां हैं, ठीक से होम वर्क कर रहे हैं या नहीं? ऐसी चीजों पर शिक्षकों की तेज दृष्टि होनी चाहिए। यदि ऐसा है तो स्टूडेंट्स को सीखने और पढने के विभिन्न स्तरों पर मदद मिलेगी और शिक्षक अनुचित चीजों की रोकथाम भी करेंगे जो सफलता के लिए बाधक हों।

सही शिक्षक वे हैं जो खुद भी घर पर पठन करते हैं और फिर पढाते है, यही व्यवहारिक ज्ञान है, और इसके बाद ही पैसे की तरह बोलता और खनकता है। विशेषज्ञों की मानें तो प्रैक्टिस पूरी समझ और बुद्धि के साथ होने से ही बेहतरीन परिणामों की उम्मीद की जा सकती है। इस स्तर पर विद्यार्थी और शिक्षकों की सशक्त भूमिका निभना आवश्यक है।

इस दौर में जब कि लाइव शो, किस्म किस्म के वीडियो पाठ, प्ले स्कूल और कोचिंग इंस्टीट्यूट के साथ ही जानकारी देने वाला और एक सबल तंत्र या माध्यम गूगल है, तो इस सबका पूरा लाभ उठाया ही जा सकता है। बंद ज्ञान चक्षुओं को खोलने और दिमाग़ में अच्छी तरह से पाठ्यक्रम संबंधित साधारण और असाधारण तथ्यों की फीडिंग होने का लाभ न केवल शिष्यो बल्कि शिक्षकों को मिलता है। फीडबैक भी मिलते रहने की सुविधा हो ताकि विषयों का सरलीकरण हो सके।

अध्ययन की अच्छी प्रवृत्ति से स्पर्धागत क्षमता बढती है जो प्रवेश परीक्षा और प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए बेहद जरूरी है। बुजुर्ग लोग कहते हैं, अध्ययन का मतलब ज्ञान है और ज्ञान यदि सागर है तो अपने लायक ज्ञान निकाल सकते हैं किन्तु गहराई में जाना ही पड़ेगा। इस सागर में ग्लास डालने से ग्लास भर पानी और बाल्टी डुबाने पर बाल्टी भर पानी मिल जाता है।

एक सही गुरू या शिक्षक ज्ञान सागर ही नहीं मार्गदर्शक भी होता है। पढाई के समय बच्चों की प्रतिभा की पहचान करने वाले शिक्षक ही प्रतिभा और मेधा क्षमता को तराशते भी हैं। यही नहीं, कभी बच्चों के संस्कार, आदतों, ऐबों और अवैतिकता पर भी अभिभावकों से बात करते हैं ताकि बच्चों में सकारात्मक प्रवृत्ति और गुणों का विकास हो सके। माता पिता और शिक्षकों को भी आलस्य, धीमी गति, पाठ को भूल जाने, संकोच, दब्बूपना और हीनता ग्रन्थियों का

जायजा लेना चाहिए। मनोवैज्ञानिक पहलुओं की भी समीक्षा की जाए जिससे कि बच्चों में प्रगति के प्रति जोश और उत्साह बना रहे। असफलताओं पर डांट डपट की बजाय बड़े स्नेह और पुचकारने से बच्चों की इच्छा जगती है और पढाई क्षमता और भी विकसित होती है।

बच्चों के लिए जो ज्ञानवर्धक और आनंददायक अभ्यास हो सकते हैं उनको शिक्षक और अभिभावक अवश्य प्रश्रय देते रहें। इसमें धैर्य और सहनशीलता वांछित है। मनोरंजक चीजों के साथ भी बराबर सीख मिले तो कोमल मन पर बेहतर प्रभाव पड़े। हमें ये भी भलीभाँति ज्ञात होना चाहिए कि पढने वाले बच्चे एक प्रतिस्पर्धा मन में लिए रहते हैं और भरसक यही कोशिश करते हैं कि शिक्षकों के पाठ और परीक्षा आदि अपेक्षाओं पर खरा उतर सकें, संघर्ष करते हुए अपनी शैक्षणिक और पाठ्येतर गतिविधियों को संतुलित करने का प्रयास बेहतर ही होता है। हताशा, अवसाद आदि नहीं पैदा न होने पाये क्योंकि ऐसे नकारात्मक आवेग सेहत और अध्ययन पर बुरा प्रभाव डालते हैं। हमें बच्चों को प्यार, समझ और सहानुभूति के साथ पोषित करने की आवश्यकता है। अच्छे तरीके ही बुनियादी आधार होने चाहिए जिससे वे क्रमिक रूप से आगे बढते रहें। शिक्षकों की कठोरता को बच्चे हमेशा गलत मानते हैं इसलिए कठोरता को मुलामियत और स्नेह भाव में बदलने की ही आवश्यकता है।

अलबत्ता, ये तो कतिपय स्नेह और मनोवैज्ञानिक बातें हैं, इनसे पृथक और भी सशक्त विचार शिक्षकों के लिए हैं। ज्ञान आधारित समाज और दुनिया में रहने वालों के लिए ज्ञान एक संपदा की तरह है। ज्ञान का निरन्तर प्रसार हो रहा है। सोचना है कि आत्मसात करने के लायक मानस है या नहीं, इस दृष्टिकोण से भी ये विचारणीय है कि शिक्षक तकनीकी ज्ञान और उपादेयता के बारे में शिक्षा ग्रहण करने वालों को सही से बताएं। ज्ञान ग्रहण के साथ ज्ञान प्राप्ति के ढंग को भी सीखना होगा। बदलते परिवेश में सूचना और सम्प्रेषण तकनीक के बारे में जानकारी दी जाए। शिक्षा और शिक्षण बिना सूचनाओं तथा विचारों के आदान प्रदान के संभव नहीं है। अपने विचारों तथा भावों के आदान प्रदान के लिए हम शाब्दिक तथा अशाब्दिक संकेतों दोनों तरह के संकेतों के विकसित रूप में शिक्षक किसी न किसी ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं जिसे बच्चों द्वारा सरलता से समझ सकें। एडगर डेल के अनुसार विचार विनिमय की दशा में विचार और भावनाओं को परस्पर जानने तथा समझने की प्रक्रिया ही सम्प्रेषण है। इसमे मनोवैज्ञानिक और सामाजिक पक्ष जैसे विचार संवेदना, भावना तथा संवेग समावेशित होते हैं। वास्तव में इस सम्प्रेषण प्रक्रिया में मौजूद साधन और तथ्यों को शिक्षक ही शिष्य समूह तक पहुंचाते हैं। इसमें संप्रेषित चीजों की गुणवत्ता भी देखी जाए। लाभकारी पक्षों की समीक्षा भी होती रहे तो अच्छा।

राजस्थान के कोटा से अन्जना मनोज गर्ग

संस्कृत वाले सर

कॉलेज के दिनों मे मेरे प्रिय शिक्षक श्री प्रह्लाद बुनकर रहे, जो कि कॉलेज में संस्कृत के व्याख्याता थे। उनका मध्यम कद, साँवले मुख पर उज्ज्वल दँत-पँक्ति, सहज सौम्य और सरल व्यवहार ,चेहरे पर एक गाम्भीर्य मिश्रित मुस्कान, उनके शीतल व्यक्तित्व को परिभाषित करती थी।

सन 1994-95 में स्नातक स्तर के द्वितीय वर्ष में कक्षा में पढाया जाने वाला संस्कृत विषय मेरे लिये कठिन होने के कारण मुझे संस्कृत व्याख्याता की ट्यूशन क्लास लेनी पडी। उनके घर पर विधार्थियों की अत्यधिक भीड उनकी लोकप्रियता का साक्षात प्रमाण थी। विषय के प्रति उनका समर्पण भाव उनकी कक्षा मे उपस्थित विद्यार्थियों संख्या प्रमाणित करती थी।

शिक्षक किताब हाथ में लिये सहज मुस्कराते हुये कक्षा में प्रवेश करते थे और सबकी उपस्थिति देख कर फिर पढाना शुरु करते थे। कौन पढ रहा है और कौन समय काट रहा है ? सभी विद्यार्थियों पर उनकी बराबर नजर रहती थी। कोई विधार्थी क्यों नहीं आ रहा ? उसको कोई परेशानी तो नहीं हैं, इन सब बातों का ख्याल रखते हुए वे विद्यार्थियों के हृदय मे कब अपना स्थान बना लेते थे, पता ही नहीं चलता था।

संस्कृत विषय पर उनकी पकड बहुत उम्दा थी, तभी तो गीता के कठिनतम श्लोकों को भी सरलता से स्पष्ट कर देते थे। हम लडकियाँ भी शैतान थी, गीता में से तरह-तरह के विचित्र सवाल पूछ-पूछ कर उन्हें एक तरह से परेशान ही करते थे, किन्तु शिक्षक कहाँ उकताते थे बल्कि सब समझते हुये भी बिना क्रोध किये सहजता से मुस्कराते हुये सभी का यथोचित समाधान कर देते थे।

परीक्षा के दिनों में तो कोई भी विधार्थी कभी भी जाकर उनसे प्रश्न पूछ सकता था। कोई भी जिज्ञासु विद्यार्थी संस्कृत शिक्षक के यहाँ से खाली हाथ लौटा हो, मुझे याद नहीं है। कभी-कभी तो अत्यधिक थके होने पर भी या कमोबेश बुखार की सी स्थिति होने पर भी शिक्षक कक्षा में पढाना नहीं छोडते थे। मेरे पापा भी जब शिक्षक से मिले तो उनकी विद्वता और विनम्र व्यवहार के वह भी प्रशंसक हो गये थे।

यूँ तो मैं पढ़ने के क्रम में शिक्षक के सम्पर्क में एक साल ही रह पायी क्योकिं शिक्षक का ट्राँसफर बाहर हो गया था और कुछ समय पश्चात मेरा भी विवाह हो गया था किन्तु व्यक्तिगत तौर पर मैं शिक्षक से आज भी जुडी हुई हूँ। गुरु-शिष्य सम्बन्ध के साथ-साथ अब एक परिवारिक सम्बन्ध के रूप में भी जुडे हुए है। मेरे पति भी उनका बहुत सम्मान करते हैं। मेरे दोनों बच्चे तो शिक्षक की शब्द संरचना और उसको लिखने के तरीके के कायल हैं।

मेरे प्रिय शिक्षक आज जयपुर में गणगौरी बाजार में स्थित "माँ शबरी राजकीय कन्या महाविद्यालय" में प्रिंसीपल है और वहीं अपने स्वभाव के अनुरूप गरीब बालिकाओं की शिक्षा में अपना योगदान दे रहे हैं।

मध्य प्रदेश के राजगढ़ से अभिषेक नागर

शिक्षक एक रचना

रचनाकर द्वारा रचित इस संसार रूपी श्रेष्ठ रचना में, कई श्रेष्ठ सृजन हुए हैं। जो प्रत्येक जीव जगत की भौतिक,आत्मिक, व आध्यात्मिक संतुष्टि को दृष्टिगत रखकर हुए है। और जैसा कि सभी धर्म ग्रंथो में निहित है। रचनाकार सदैव प्रत्येक जीव को द्वि मार्गी राह के लिए अग्रसर कर देते हैं, जिसका चयन पूर्णतः जीव पर निर्भर रहता है। या हम कह सकते हैं, रचनाकर ने संसार को दो भागों में विभाजित किया है। रचनाकर ने पाप के साथ पुण्य, लाभ के साथ हानि, फूल के साथ कांटे, दिन के साथ रात, संगत के साथ असंगत, आदि बनाकर इस जीव जगत में प्रत्येक जीव धारी को विचरण करने के लिए छोड़ दिया है।

परंतु इसका चयन स्वयं उस जीव धारी को ही करना है, वह रचनाकर के बनाए गए इस द्वि मार्गी संसार में किस मार्ग का चयन करें, वह अल्पज्ञ दोनों मार्गों को देख कर तय करने में असक्षम है, उसे किस मार्ग का चयन करना है। मानव के इस अल्पज्ञान को देखकर रचनाकर ने अपनी एक श्रेष्ठ कृति पथ प्रदर्शक के रूप में बनाई। पथ प्रदर्शक ने प्रत्येक जीवधारी को द्वि मार्गी संसार से सही मार्ग चुनने अल्पज्ञ से बहुज्ञता लाने का एक अकल्पनीय कार्य किया। पथ प्रदर्शक ने जीव जगत के अवगुणों को समाप्त कर एक सगुण संसार का निर्माण किया। और जिसने पथ प्रदर्शक के दिखाएं गए पद को चुना वह सर्वदा ही भौतिक, आत्मिक और आध्यात्मिक संतुष्टता के साथ सृष्टि में एक विवेकशील व्यक्तित्व के रूप में सदैव पूजित रहा है। और जिसने इस पथ प्रदर्शक की अवहेलना की वह सदैव ही मार्ग में भ्रमित ही रहा है या अनुचित मार्ग की ओर अग्रसर होकर किसी के पथ का शूल बनकर ही रहा हैं। पथ प्रदर्शक के द्वारा अवगुणों को सगुणों में बदला गया ऐसे शिष्ट ,श्रेष्ठ और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी सदैव से ही इस संसार में गुरु, शिक्षक, आचार्य के रूप में सुशोभित व पूजित रहे हैं। मुख्यतः कोई भी व्यक्ति अपने प्राथमिक शिक्षक को नहीं भूल सकता कहते हैं एक बच्चा कोरे कागज की तरह अपने शिक्षक के पास आता है प्रथम बार विद्यालय देखने वाले उसे बालक की मंनः स्थिति उस अंकुरित बीज की तरह होती है जो अपने नन्हें- नन्हें कदमों से उच्चता के शिखर की और अग्रसर। अपने छोटे- छोटे प्रयासों से एक नए युग की कल्पना लिए वह धीरे धीरे अंकुरित होकर अपनी चीर निद्रा से जाग्रत हो सूर्य की उच्चतम आभा, पवन के वेग, माटी की महक व जल की धारा के साथ संघर्ष कर, एक नए संसार को अपनी दृष्टि से देखने को आतुर हैं। वो आतुर हैं! इन्द्र धनुष के अलग- अलग रंगों की पहचान कर, इन रंगीन उद्यान में सजे अलग-अलग पुष्पो को देखने, जानने व समझने को, इसका हिस्सा बनने को। पर वह अभी सृष्टि का पूर्ण अवलोकन कहां कर पाया था। उसने सूर्य की चमक तो देखी, पर उसकी तीव्रता का पता नहीं था, सुंदर उद्यान के सुंदर सुगंधित पुष्प तो देखे पर उनके काटो को कहां देख पाया था कि नहीं पता उसका सामना सुगंधित पुष्प ही नहीं, कष्ट कारी काटो से भी होगा। जो जीवन पर्यन्त उसकी राह में सहसा अवरोध उत्पन्न करते रहेगे। पर सहसा नव अंकुर की नज़र उस उद्यान के माली की और चली जाती हैं। जो विश्वास की ढ़ाल बन नव अंकुर के लिए ही उसके पीछे खड़ा था। तथा एक उम्मीद का दिया बन नव अंकुर के मन में एक द्रण विश्वास उत्पन्न कर रहा था। तू बाहर आ, तू आगे बढ़, मैं सदैव तैरें साथ खड़ा हूं। इसी प्रकार शिक्षक भी अपने प्रत्येक शिष्यों के साथ कदम से कदम मिला कर खड़ा हैं, वह उन सभी को अश्वस्त करता हैं तुम आगे बड़ो मैं सदैव तुम्हारे साथ कदम से कदम मिला कर खड़ा हूँ मैं तुम्हारे मार्ग के प्रत्येक शूल को हटाकर तुम्हारे मार्ग को प्रशस्त करूँगा। शिक्षक समाज का आधार स्तंभ होता है, जो सदैव समाज को नई दिशा प्रदान करता है। हम शिक्षक को ईश्वर की एक श्रेष्ठ रचना मान सकते हैं, जो घोर तिमिर में प्रकाश का वह पुंज हैं जो तिमिर को सर्वदा के लिये विलुप्त कर उसमे आभा भर देता हैं।

गुरु पारस को अन्तरो, जानत हैं सब संत।
वह लोहा कंचन करे, ये करि लेय महंत।।

रांची के हीनू से नीरज वर्मा

उपाध्याय सर

स्मृति में एक अध्याय है जो मुझे आज भी याद है। उपाध्याय सर, जिनका नाम ही काफी था डर के लिए। उनकी क्लास में सबका खून आधा हो जाता था सुखकर। कब किससे कौन सा सवाल पूछ बैठेंगे और बेत से सटा सट की झड़ी लगा देंगे। लेकिन एक दिन, शीला नाम की एक छात्रा के साथ कुछ अलग हुआ। वह क्लास में सबसे पीछे बैठी थी और उपाध्याय सर का क्लास था। उसे एक सवाल बिलकुल समझ में नहीं आ रहा था और डर से उसका चेहरा सफेद हो रहा था। तभी उपाध्याय सर क्लास में आए और शीला को देखकर पूछा, "क्या हुआ बेटी?" शीला ने थूक गटक कर धीमी आवाज में कहा, "सर, ये सवाल मुझे बिलकुल समझ में नहीं आ रहा है।" उपाध्याय सर ने ठहाका मार कर हंसते हुए कहा, "अच्छा ये बात है!" फिर उन्होंने विनोद नाम के एक तेज़ लड़के से कहा, "ये सवाल तुम तब तक ब्लैक बोर्ड पर समझाओगे जब तक शीला और बाकी बच्चे समझ ना जाए।" इसके बाद उपाध्याय सर ने बच्चों से कहा, "डरना नहीं डटना सीखो। कोई भी ऐसा काम नहीं है जो तुम नहीं कर सकते हो। भारत का भविष्य तुम लोग ही तो हो। तुम्हीं सब डर जाओगे तो भारत मज़बूत कैसे होगा?" आज भी मुझे उपाध्याय सर की बातें याद हैं और उनका चेहरा आँखों में घूमता है। सफेद धोती कुर्ता और हाथ में बगुला वाला छाता उनका पहचान था। साथ हीं, चमड़े का जूता का ठक-ठक करना दूर से ही उपाध्याय सर के आहट का एहसास करा देता था। उन्होंने हमें सिखाया हैं कि जीवन में कठिनाइयों का सामना करना और उनसे सीखना बहुत महत्वपूर्ण है।

कर्नाटक से पद्मा अग्रवाल

हिन्दी बहन

अरे वाह हिंदी बहन, आज तो तुम बहुत बढ़िया बनारसी साड़ी में सज धज कर निकली हो.... कहाँ जा रही हो? इंग्लिश बहन, तुम्हें शायद याद नहीं, आज हिंदी दिवस है... 14 सितंबर... देश भर में हिंदी दिवस मनाया जा रहा है। जगह-जगह कार्यक्रम होते हैं और मुझे सम्मानित किया जाता है। मेरी आत्मा खुश हो जाती है। यदि तुम्हें मेरा सम्मान देखकर खुशी होती है, तो आज मेरे साथ चलो बहन... जरूर-जरूर बहन, तुम्हारा मान-सम्मान देख मुझे बहुत अच्छा लगेगा। वह दोनों एक जाने-माने अंग्रेजी स्कूल में पहुँच गई। वहाँ स्टेज पर बड़ा सा बोर्ड पर लिखा था, "टुडे इज हिंदी डे - 14 सितंबर"। हिंदी की आँखों से अपनी दुर्दशा देखकर आँसू निकल आये थे। चेहरे पर गहरी उदासी छा गई। तभी मुख्य अतिथि स्टेज पर आये। वह बोर्ड की तरफ देखकर बोले, "माई डियर फ्रेंड्स.... गुड मॉर्निंग... टुडे वी आर सेलीब्रेटिंग हिंदी डे - 14 सितंबर... आई फील प्राउड फॉर हिंदी.... बच्चों ने तालियाँ बजाई। इतना सुनते ही इंग्लिश बहन बोली, "हिंदी बहन, तुम तो कह रहीं थीं कि मेरा आज बहुत मान-सम्मान होता है, लेकिन यहाँ तो सब अंग्रेजी में बोल रहे हैं। यहाँ तो साफ-साफ तुम्हारा अपमान और मेरा सम्मान हो रहा है!" हिंदी बहन मैं तुम्हारा दिल नहीं दुखाना चाहती, लेकिन यदि इस तरह से मेरा अपमान किया जाता तो मैं यहाँ एक मिनट भी नहीं रुकती। ऐसा सुनते ही हिंदी फफक-फफक कर रोने लगी। अपने आँसू पोछते हुए बोली, "सच कह रही हो बहन... मुझे अपनों ने ही ज्यादा अपमानित किया है। हमेशा तुम्हें मेरे ऊपर आसन देकर बैठाया है। इसमें गलती तुम्हारी कतई नहीं है, वरन् मेरे अपनों की है। अपनों के द्वारा किया गया अपमान ज्यादा कष्टकारी और असहनीय होता है। मैं अब यहाँ एक पल के लिये भी नहीं रुक सकती।" रोती बिलखती हिंदी के पीछे-पीछे इंग्लिश भी वहाँ से चल दी। हिंदी बहन, तुम रो नहीं... तुम तो राष्ट्रभाषा पद पर सुशोभित हो। दुनिया में तुम्हारा बहुत मान-सम्मान बढ़ रहा है। भगवान् के यहाँ देर है अंधेर नहीं.... कहते हैं कि घूरे के भी दिन कभी न कभी फिर जाते हैं। तुम तो बहुत समृद्ध और सरल हो... तुमको जल्दी ही तुम्हारा मान-सम्मान मिलेगा। हिंदी का अपमान करने वालों को भारत में रहने का भी हक भी नहीं बनता। इंग्लिश बहन की इन बातों को सुन हिंदी बहन भावुक कर गले लग गई।

उत्तर प्रदेश के कानपुर से अरुण प्रिय

मूल्यांकन

बात लगभग पचास वर्ष पूर्व की है उन दिनों मेरे पिता जी शहीदों की स्मृति में स्थापित अमर शहीद इंटर कालेज बेवर में वाणिज्य प्रवक्ता थे। तब आज की तरह कापी मूल्यांकन के केंद्र नहीं हुआ करते थे, कापियां दूरदराज के जनपदों से ट्रांसपोर्ट के माध्यम से शिक्षक के घर पहुंचा करतीं थी और एक निश्चित अवधि के भीतर जंचने के उपरांत इलाहाबाद (प्रयागराज) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को पहुंचाई जातीं थी।

वाक्या मजेदार भी है और एक ईमानदार शिक्षक की बेचैनी से जुड़ा हुआ भी। हुआ ये कि पूर्वांचल के एक जनपद से हाई स्कूल के अर्थशास्त्र की कापियां मूल्यांकन के लिये आईं जैसा मुझे याद पड़ता है कि निश्चित अवधि में कपियों का मूल्यांकन और क्रॉस लिस्ट तैयार कर बोर्ड को भेजना कठिन काम रहा होगा, चूंकि मैं बी .ए .का छात्र था और अर्थशास्त्र मेरा विषय भी था सो मेरे पिता ने अपना बोझ कम करने की गरज से कुछ उत्तरपुस्तिकाएं जांचने के लिये मुझे सौंप दीं। ये कार्य मुझे गौरवान्वित होने जैसा लगा। मैं प्रसन्न था कार्य को मन लगा कर करने लगा, तभी एक घटना ने मेरे होश ठिकाने लगा दिये।

हुआ दरसल ये कि मेरे पिता और बाबा एक मुकद्मे के सिलसिले में मैनपुरी गये हुये थे घर पर मैं मेरी माँ और छोटे भाई बहन थे। मेरे बाबा की मोटे कपड़े की एक दुकान थी। मैं दुकान खोल कर बैठ गया तभी एक महाशय ने दुकान पर कदम रखा मैंने कस्टमर समझ कर पूंछा " जी क्या चाहिये , " वे चुप रहे फिर सकुचाते हुये बोले" बेटा मैं जगदीश पुर से आया हूँ आपके पिता या भाई के पास अर्थशास्त्र की कापियां आई हैं, मुझे मास्टर साहब से मिलना है। "

" मेरे पिता जी तो बाहर गये हैं, परन्तु आपको कैसे पता कि कापियां यहाँ आई हैं। " मैंने जिज्ञासावश पूंछा।"

" वो बोले मैं पता करके ही आया हूँ, आपके पिता का नाम रामचन्द्र शुक्ला है। " वे थोड़ा मुस्कुराकर बोले।

" जी। " फिर उन्होंने अपनी राम कहानी एक ही झटके में सुना डाली। उनकी पुत्री हाई स्कूल का फर्स्ट पेपर देना ही भूल गई थी, पढ़ने में अव्वल है इसलिये वे चाहते हैं कि सेकेंड पेपर में जरूरत भर के नंबर मिल जायें ताकि उसका साल खराब न हो। भावुकतावश मैं उन्हें दुकान पर छोड़ कर पास ही अपने घर आया और चुपके से उस लड़की की कापी निकाल कर ले गया, मेरी माँ ने ऐसा करते देख लिया था उन्होंने हल्का विरोध भी किया पर मेरा मंतव्य न भाँप सकीं। बहरहाल मैंने वो कापी उन महाशय को दिखा दी। कापी मेरे पिता द्वारा जांची जा चुकी थी और उस लड़की ने उनतीस नंबर प्राप्त किये थे। कापी देखकर उनके चेहरे पर चमक आ गई थी मेरी बातों से आश्वस्त होकर वे चले गये। शाम को पिता जी आये चाय नाश्ता के उपरांत माँ ने बता दिया कि आज ये साहब एक कापी लेकर बाहर गये थे, फिर क्या मेरा पुलिसिया ट्रायल प्रारंभ हुआ मार की डर से मैंने सारी घटना जस की तस बयां कर दी। पिता जी क्रोध में उठे और वही कापी निकालकर एफ आई आर कराने पुलिस स्टेशन जाने को हुये। माँ ने रोका बाबा ने रोका ऐसा न करें, बड़ी मुश्किल के बाद पिता मान गये। पिता का तर्क था कि बोर्ड द्वारा भेजा हुआ आदमी न हो। मैं बेचारा सा पिता के सामने खड़ा था। मेरे अंदर भी दो प्रकार की बातें कौंध रहीं थीं कि कहीं ये आदमी वाकई बोर्ड का आदमी ना हो और दूसरी उस बेचारी लड़की का क्या दोष ? अंततोगत्वा बाबा ने पिता जी को मना लिया और बिगड़े वातवरण में ठंडी फुहार का अहसास होने लगा। मैंने कान पकड़ कर इस कृत्य की क्षमा माँगी। मैंने महसूस किया कि जब तक बोर्ड की सारी प्रक्रिया समाप्त न हुई तब तक पिता बेचैन बने रहे।

उत्तर प्रदेश के चित्रकूट से डॉ. सतीश बब्बा

राघव पंडित जी

बचपन, बचपन का प्राइमरी स्कूल और उसके पंडित जी की याद न हो तो फिर कुछ नहीं है। हमारा गांव बड़ा है, फिर भी उस समय बहुत कम बच्चे पढ़ने जाते थे। कक्षा एक से पांच तक में अधिकतर तीस से चालीस बच्चे होते थे। मेरे छः से आठ सहपाठियों में नारायण मेरे नजदीक था, जो बहुत चतुर और चालाक था। पढ़ने में मन मेरा भी नहीं लगता था। स्कूल में दो कमरे और एक बरामदा हुआ करते थे, और ज्यादातर कक्षाएं हम बच्चों के द्वारा बनाए चबूतरे पर ही लगती थी, जो खुले आसमान के नीचे गली के बगल में पहाड़ और चबूतरे के मध्य पगडंडी रास्ता था। हम अपने बैठने के लिए बोरा ले जाया करते थे और मॉनीटर की देखरेख में स्कूल से लगा पहाड़ से पत्तियां लाते और उसी से झाड़ू का काम लेते हुए सफाई करते थे। राघव पंडित जी अकेले मास्टर थे, वो साइकिल से अपने गांव से वही दोपहर में आते थे और हम बच्चे पड़ोस से चारपाई लाते थे, वह हाथ पैर प्रक्षालन करते और आराम करते थे। फिर कक्षा १ से शुरू करते थे, कल जो कह गए थे सुनते थे। एक बार हमारी बारी आई और हमने पढ़ा नहीं तो क्या सुनाते! हम पर छड़ी बजी और गादी सूझ आई और हम रोना बंद कर दिया तब कहीं जी छूटा। मैं इकलौता बेटा घर आकर राघव पंडित जी की शिकायत किया, बापू ने मुझे ही डांटा, मारा नहीं। अम्मा ने इतना मारा कि धूल झड़ गई। लेकिन बड़ी बहन का चांटा आज भी याद है। उसने दो चांटे जड़ दिये और कहा, "कुछ आता नहीं है, पंडित जी कम मारते हैं, बापू कल पंडित जी से कहना, कम मारते हैं और कुटाई करें!" अबके बापू होते तो मास्टर को मारने लाठी लेकर पहुंच जाते। अब हम पढ़ने लगे, सब कुछ आने लगा। मैं नारायण, हरीनारायण और गगुलिया (संतोष) हर विषय में होड़ लगी हुई थी। राघव पंडित जी बाहर से कड़े और अंदर से मुलायम थे। पंडित जी को लगता मेरी छड़ी का कमाल है और हमें तो पंडित जी की छड़ी और बहन का चांटा दोनों कमाल के लग रहे थे। हम कक्षा पांच की परीक्षा देने गए थे रैपुरा, जहां कामता मुंशी जी के घर में रात रुके थे। राघव पंडित जी का गांव गहोरा रैपुरा के पास ही था। कामता मुंशी जी के घर में अपना घर जैसा लगा था, लेकिन खबरदार जो हमें नकल करने दिया गया हो। हां रात में कुछ देर पढ़ाया जरूर था। हम तीनों नारायण, हरीनारायण और गगुलिया (संतोष) लगभग नंबर बराबर बराबर ही लाए थे। फिर राघव पंडित जी का प्रमोशन जूनियर हाईस्कूल पतेरिया के लिए हुआ था और वो रिटायर के बाद जल्दी ही अपना पार्थिव शरीर वही अस्सी के दशक में छोड़ दिया था। लट्ठा वाला कक्षा पांच का सबसे कठीन सवाल आज भी नहीं भूल पाए। हमें और जिनको भी उन्होंने पढ़ाया है राघव पंडित जी नहीं भूलेंगे। हम उनको बारम्बार प्रणाम करते हैं और राघव पंडित जी शिक्षक दिवस पर बहुत याद आते हैं। रक्षाबंधन में बहन आती जरूर है लेकिन अब चांटा नहीं मारती है। वह भी बूढ़ी हो गई है। काश, राघव पंडित जी जैसे मास्टर फिर हो जाते!

महाराष्ट्र के पुणे से डॉ. अनिता जठार

मेरा छात्र प्रेम 'ओझा'

“टीचर आप मेरे बेटे को ओझा-ओझा कहके न पुकारे। उसे अच्छा नहीं लगता।” माँ ने बेटे की साइड लेकर कहा।
“क्यों, क्या हुआ?” टीचर ने पूछा। “जी उसे क्लास में बहुत अपमान लगता है ओझा कहने से। ”

माँ ने कहा।
टीचर ने कहा, “ इसमे गुस्सा होनेवालो क्या बात हैओझा कहने से तो उसे गर्व होना चाहिए। ओझा कहने से आपका लड़का जल्दी आपनी पढ़ाई पूरी करता है। ओझा कहने से अगर उसकी प्रतिभा उभरती है तो मैं उसे ओझा ही कहूँगी।”

माँ ने कहा, “जी आप की बात सही है टीचर जी मगर.....मगर।”

टीचर ने कहा,“मगर क्या? ओझा आपका सरनेम है और कोई आपको सरनेम से आवाज दे तो उसमें बुरा क्या है।”
“जी गलत तो कुछ भी नहीं है लेकिन मेरे बेटे को सरनेम पसंद नहीं है।” माँ ने कहा।

“देखिए! ओझा आपका सरनेम है और आपके बेटे को इस पर गर्व होना चाहिए न की शर्म आनी चाहिए। यही बात आपको भो अपने बच्चे को बताना पढेगी। मैं उसे उसके सरनेम से ही पुकारूंगी। आप बेटे को अपने उपनाम पर गर्व करना अवश्य सिखाइए। ”

तात्पर्य - हर किसी का उपनाम उसका गर्व होता है, यह उसकी पहचान और व्यक्तित्व का एक हिस्सा होता है। लेकिन अक्सर हम देखते हैं कि लोग अपने उपनाम को लेकर असुरक्षित या अपमानित महसूस करते हैं। यहाँ तक कि बच्चे भी अपने उपनाम को लेकर शर्मिंदगी महसूस करते हैं और दूसरों से अपने उपनाम को छिपाने की कोशिश करते हैं। लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि उपनाम से आवाज देना अपमान नहीं है, बल्कि यह एक सामान्य बात है जो हमारे समाज में होती है? क्या हमने कभी सोचा है कि हमारा उपनाम हमारी पहचान का एक हिस्सा है और हमें इसे गर्व से स्वीकार करना चाहिए? यह भावना बच्चों में पनपना अति आवश्यक है ताकि वे अपने उपनाम को गर्व से स्वीकार करें और इसके साथ ही दूसरों के उपनाम का भी सम्मान करें। इस तरह की भावना बच्चों में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को बढ़ावा देती है और उन्हें सकारात्मक और समावेशी वातावरण में विकसित होने में मदद करती है। इसलिए, आइए हम अपने उपनाम को गर्व से स्वीकार करें और दूसरों के प्रति सम्मान की भावना रखें। आइए हम अपने बच्चों को सिखाएं कि उपनाम से आवाज देना अपमान नहीं है, बल्कि यह एक सामान्य बात है जो हमारे समाज में होती है। आइए हम एक सकारात्मक परिवर्तन लाने में मदद करें और अपने उपनाम को गर्व से स्वीकार करें।

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर से प्रेमलता यदु

प्याजी पकौड़े

मुझे ब्याह कर अपने ससुराल आए अभी कुछ ही महीने बीते थे और मैं स्वयं को यहां के माहौल में ढालने का प्रयास कर ही रही थी। परंतु यह इतना सहज नहीं था क्योंकि मेरे पीहर और ससुराल दोनों के माहौल में बहुत अंतर है। यहां ससुराल में सुबह की चाय से लेकर रात के खाने तक का सभी के लिए समय निर्धारित है जिनका सभी बड़ी निष्ठा व कड़ाई से पालन करते हैं और मेरे मायके में ऐसा कुछ भी नहीं है।

मेरे मायके में तेल, मसाला व चटपटा खाना ना बने तो किसी के गले से निवाला नीचे ही नहीं उतरता है और यहां बाबू जी यानि मेरे ससुर जी को शुगर की शिकायत है, अम्मा जी को बी.पी की इसलिए यहां तेल, चटपटा, या मसालेदार खाना ना के बराबर ही बनता है। मेरी पहली रसोई के ही दिन अम्मा जी ने मुझे हिदायत दे दी कि उन्हें और बाबू जी को मीठा, नमकीन व तली-भुनी चीजों से परहेज है। उनके इतना कहने के बाद आज तक मैं कभी हिम्मत ही नहीं जुटा पाई कि अपनी पसंद का कुछ चटपटा बना लूं। वैसे मुझे कुछ भी बनाने या खाने की मनाही नहीं है। मैं पूर्ण रूप से स्वतंत्र हूं बाबजूद इसके मन में एक हिचक है।

आज मेरे पति अंशुल की दफ्तर से छुट्टी है और सुबह से ही आसमां पर काले घने बादल उमड़-घुमड़ कर वर्षा ऋतु के आगमन का संदेश दे रहे हैं। काले घनेरे बादलों को आसमान के संग यूं आंख मिचौली खेलता देख मेरा बावरा मन बारम्बार बादलों के संग उड़ता हुआ मेरे पीहर पहुंच जाता है। जहां बारिश की पहली फुहार के संग मां रसोई में तेल की कढ़ाई चढ़ा देती है और तरह-तरह के पकौड़ों का दौर शुरू हो जाता है। अंत में बारी आती है प्याजी पकौड़े की जो मुझे बेहद पसंद है। मैं, पापा, भाई और मेरी छोटी बहन सभी इकट्ठे बैठ कर बारिश का आनंद लेते हुए पकौड़ों का लुत्फ उठाते थे।

काले घने बादल, प्याज के पकौड़े और अपने पीहर की खूबसूरत स्मृतियों में मेरा मन सारा दिन उलझा रहा। अंशुल मेरी अधीरता की वजह जानने का प्रयत्न करते रहे किन्तु संकोच वश मैं उनसे कुछ कह नहीं पाई। शाम होते-होते ही रिमझिम बारिश भी शुरू हो गई। पहली बारिश, वह भी बिना पकौड़ों के.....मेरा मन उदास हो गया। मैं चुपचाप अपने कमरे की खिड़की के करीब जा बैठी। थोड़ी ही देर बाद मुझे पकौड़े बनने की खुशबू आने लगी। मैं फौरन उठ खड़ी हुई और रसोई घर की ओर चल पड़ी. रसोई में जाकर मैंने जो देखा मेरी आंखों को यकीन नहीं हुआ। मैंने देखा अम्मा जी प्याजी पकौड़े बना रही है। मुझे इस तरह रसोई के दरवाजे पर आश्चर्य से खड़ा देख कर अम्मा जी बोली -

"अरे वहां क्यों खड़ी हो, यहां पास आओ और पकौड़े टेस्ट करके बताओ कैसे लग रहे हैं। मुझे पता है तुम्हें प्याजी पकौड़े बहुत पसंद है। पिछली दफा जब तुम्हारा भाई घर आया था तो उसने ही मुझे बताया था कि तुम्हें बारिश में प्याजी पकौड़े बेहद पसंद है। मैं आज सुबह से ही तुम्हें देख रही हूं। तुम गुमसुम सी हो, जब से आसमां पर काले बादल घिर आए हैं तुम उदास हो, तुम्हें मां के हाथ के पकौड़े याद आ रहें हैं, ठीक कह रही हूं ना.....? सासू मां के इतना कहते ही मैं उनके गले से लग गई, मेरी आंखें छलक आई। आज मुझे इस बात का भी एहसास हो गया कि बच्चे अपने मन की बात चाहे कहें या ना कहें मां सब समझ जाती है। मां को सब पता होता है फिर चाहे वह सासू मां ही क्यों ना हो।

उत्तर प्रदेश के नोएडा से मृत्युंजय कुमार मनोज

वो नाश्ता

'फिर से सूखी रोटी और आलू की सब्जी। पिछले तीन महीने से यही खाना खा-खाकर ऊब चुका हूं। मैं नहीं खाऊंगा' -खाने की थाली को गुस्से में उलटते हुए पप्पू ने कहा। 'अरे बेटा! खाने का अपमान नहीं करते हैं। सुबह में अपने घर से खाना खाकर ही बाहर निकलना चाहिए। कल तुम्हारे पसंद का खाना बना दूंगी। अभी जो बना है, खा लो'-श्यामा, पप्पू की मां, ने दुःखी मन से समझाते हुए कहा।

दिल्ली के बुराड़ी इलाका का 'श्यामा निवास'। जनवरी महीने की कंपकंपाती ठंड। रविवार का दिन। सुबह आठ बजे हैं। लेकिन 'श्यामा निवास' का माहौल गर्म है। पप्पू नौवीं क्लास में पढ़ता है और चार भाई-बहनों में वह सबसे छोटा है। उसे तनिक भी भूख बर्दाश्त नहीं। भूख के मारे उसका क्रोध सातवें आसमान पर है।

जीवन दास, पप्पू के पिता, दिल्ली में बैटरी बनाने की प्राइवेट कंपनी में सुपरवाइजर के पद पर काम करते थे। घर के एकमात्र कमाऊ मेंबर हैं। किसी तरह गुजारा हो जा रहा था। किंतु कंपनी घाटे में चलने के कारण बंद हो गई। अब जीवन जी पिछले एक वर्ष से एक रेजिडेंशियल सोसायटी में गार्ड की नौकरी करते हैं। तब से घर की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है।

'मां, मैं चाचा जी के यहां जा रहा हूं। वहीं नाश्ता कर लूंगा' -पप्पू ने क्रोधित मुद्रा में साईकिल निकालते हुए कहा। दो किलोमीटर की दूरी पर रामनिवास दास जी का घर है। रिश्तेदारी में उसके चाचा लगते हैं। वे दिल्ली सरकार में बिजली विभाग में इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं। वे पप्पू को बेटे जैसा मानते हैं। पप्पू को भी उनसे बड़ा लगाव है।

'बेटा, मेरी मानो तो उनके यहां मत जाओ।हमारी माली हालत किसी से छिपी नहीं है। ग़रीबों का कोई रिश्तेदार नहीं होता है। उसे कोई नहीं पहचानता है' -श्यामा जी ने समझाते हुए कहा। लेकिन पप्पू नहीं माना। कुछ देर बाद।

'प्रणाम चाचा जी। प्रणाम चाची जी' -पप्पू ने आदर सहित कहा।

'आओ बेटा। बहुत दिनों के बाद आए। हमेशा सोचता हूं तुम्हारे घर जाऊं। पर समय ही नहीं मिलता है। पापा-मम्मी का क्या हाल-चाल है? तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है? सुबह-सुबह आए हो। नाश्ता-पानी करके जाना' -रामनिवास जी ने कहा।

नाश्ते का नाम सुनते ही पप्पू के मन में पूड़ी-सब्जी की थाली घूमने लगी। अक्सर चाचा जी के यहां उसे यही खाने को मिलता था। 'संडे का दिन है न। सुबह लेट से उठना होता है। सारे काम में लेट हो ही जाता है। अभी तक हमारे यहां नाश्ते में कुछ नहीं पका है। आराम से होगा। लेकिन चलो, तुम्हें कुछ स्पेशल खिलाती हूं। रात की बची रोटी है। नमक, सरसों के तेल और प्याज के साथ खाने में तुमको खूब मज़ा आएगा। हमलोगों ने कई बार खाया है' -वीणा, उसकी चाची ने थाली परोसते हुए कहा।

'गरीबों के...रिश्तेदार.. नहीं..' मां की बातें पप्पू के जेहन में घूमने लगी। कच्ची उम्र में वह सांसारिक जीवन के एक कटु अनुभव से रु-ब-रु हो रहा था। वह आश्चर्यचकित मुद्रा में नाश्ते की थाली और अपने पिता-समान चाचा को देखे जा रहा था। उसे अपने घर की सूखी रोटी और आलू की सब्जी की याद आ गई।

पंजाब के पठानकोट से डॉ. लेखराज शर्मा

मां का कर्ज

अब तो उस के पास हल्का सा स्वाभिमान भी ना बचा था। चमड़ी पर उभर आईं खारिश और लाल चकतों ने उसका बुरा हाल कर दिया था। लाल चकतों के इलावा अब कहीं कहीं सफ़ेद दाग के छोटे छोटे धब्बे भी पूरे शरीर पर दिखाई देने लगे थे। थोड़ी सी गर्मी भी अब उससे बर्दाश्त नहीं होती थी। पसीने की बूँदें बार बार उसके शरीर और माथे और गालों पर उभर आतीं और वह बार बार अपने हाथ में पकड़े रुमाल से साफ करता वह अक्सर दिखाई देता था। उसकी आँखें भी कांच की बड़ी बड़ी गोलियों की भांति उभरी हुई अटपटी सी दिखाई देती थी। आँखों के नीचे बड़े बड़े काले रंग के घेरे भी आ गए थे। अब उसे अपनी जिंदगी दूभर सी लगने लगी थी। उसने अपनी दूसरी शादी समाचार में प्रकाशित मैट्रीमोनियल को पढ़ कर की थी। इस बार उसने अपने घर परिवार और माँ को भी भनक नहीं लगने दी थी। उसे शंका थी की यह लोग अवश्य ही उसे कुछ ना कुछ नकारात्मक कह कर उसे आगे नहीं बढ़ने देंगे। पहली शादी के पश्चात जिस तरह का व्यवहार उसकी पत्नी ने उसके साथ किया वह उसे असहनीय लगता था। वास्तव में वह फिरोजपुर में किसी दूसरे विभाग में काम करती थी। वहां से रोज आना जाना किसी भी तरह से हो नहीं सकता था। दो महीने तो थोड़ी थोड़ी छूटी ले कर निकल गए। लेकिन ज्यादा तेर तक ऐसा संभब नहीं था। उसने खुद भी उसके पास दूसरे नगर में जाना कभी दिल से स्वीकार नहीं किया था। उसकी बदली हो सकती थी लेकिन उस ने कभी कोशिश नहीं की। एक बार उसने अपने अनमने मन से अपनी बदली उस नगर के के किसी स्कूल में करवाने की सोची भी थी लेकिन वह हो नहीं पाया। उसकी पत्नी की बदली हो नहीं सकती थी। बह किसी विश्व विद्यालय के प्रबंधकीय विभाग में कार्यशील थी। उसकी बदली किसी भी तरह से हो नहीं सकती थी। उसे तो नौकरी छोड़नी पड़ती। उसे भी ऐसा करना कभी ठीक नहीं लगा। दोनों अपनी अपनी जगह अडिग रहे। समय भागता चला गया। एक दिन मिल बैठ दोनों ने सहमति से एक दूसरे से अलग होने का फैसला कर लिया। दोनों अपने अपने परिवारों का मोह त्याग नहीं पाए और समय का करूर पंजा पति पत्नी के पवित्र रिश्ते को चट कर गया। दोनों न लिखित रूप में तलाक ले कर अलग हो गए। दोनों एक दूसरे के पास बैठ कर रात भर रोते रहे और फिर सुबह हमेशा हमेशा के लिए दूर दूर चल गए। अब की बार उसने अपने हृदय में कई सपनों को संजो रखा है। वह अब ऐसा कुछ नहीं करेगा जिससे इस पवित्र रिश्ते को ज़रा सी भी ठेस ना लगे। परिवार का मोह भी त्याग देगा। वह पूरे समर्पित भाव से आगे बडेगा। उसने भी तो एक बड़े नगर से अपने पूरे परिवार को छोड़ कर उसके पास चले आना हैं। नौकरी तो वह पहले ही छोड़ चुकी है। उसे तो अब घर ही संभालना है। वह सभी कुछ उसे पहले ही बता देगा। दोनों मिल बैठ फैसला कर लेंगें। कहां रहना है। अगर कहीं आस पास के नगर में भी जाना पड़ा तो चले जाएंगे। परिवार भी छोड़ देगा। किसी प्रकार का कोई समझौता वह उनसे नहीं करेगा। जो उसकी शादी विवाह में रोड़ा बन सकता हो। पूरी तन्खाह वह हर महीने उसके कदमों में रख दिया करेगा। उसे ही घर चलाना होगा। 'उसके बड़े भाई को उसने पूरा आश्वासन दिया था --'मैं इसे हर सुविधा देने कई कोशिश करूंगा।' उसकी बातें सुन कर उन्हें उस पर पूरा विश्वास हो गया था फिर अपनी बहन के रहन सहन कई खर्चीली पद्धति को देखते हुए उसके बड़े भाई ने उस से स्पष्ट बात करनी चाहिए थी -

'देखो भाई! इस प्रकार करोगे तो इसकी आवश्यकताएं पूरी करनी आप के लिए कठिन हो जाएंगी। यह हमारी लाडली बहन बहुत खर्चीली है। 'उसके भाई ने उसे चेताया था। यह सब कहते कहते उसके बड़े भाई कई आँखों में आंसू छलक आए थे। फिर उसके मुँह से केवल इतना ही निकल पाया था -

'हमारे माँ बाप ने इसे बहुत लाड़ प्यार से पाला है। हो सके तो इसे खुश रखने का प्रयास करना। हमारे लायक कभी कोई काम हो तो विना झिझक कहना। हम हर हाल उसे पूरा कर ख़ुशी महसूस करेंगे।' मैं हर हाल कोशिश करूंगा कोई ऐसी नौबत ना आए, भाई साहिब।' उसने भी उनको पूरा विश्वास दिलाने का प्रयास किया था। पंकज एक खूबसूरत, पढ़ी लिखी ज़हीन लड़की थी। किसी तरह से उसकी पहली शादी टूट चुकी थी। शादी के बाद उस पर

मुश्किलों के पहाड़ टूट पडे थे। जब पंकज के साथ उसकी मुलाक़ात हुई थी तो उसे लगा था कि ईश्वर ने उसे अपने जीवन को एक बार फिर संवारने का अवसर प्रदान किया है इसलिए उसका रोम रोम पुलकित हो गया था। जिस प्रकार पंकज ने उसकी तरफ अपना हाथ बढ़ाया था और जो हौसला दरिया दिली, मिजाज उसने दिखाया था उसे देख कर वह भीतर ही भीतर ख़ुश था। ऐसे में उसने वहीं बैठे बैठे उससे शादी कर लेने का अपना मन बना लिया और अपना फैसला भी उन्हें बता दिया। उसके फैसले को सुन कर पंकज भी खुश थी। उसकी ख़ुशी का भी कोई ठिकाना नहीं था। थोड़ी देर चाय पानी के पश्चात उन्होंने एक दूसरे से विदा ली। घर पहुंच कर मोहिंदर ने भी सारी घटना और अपना फैसला अपनी माँ और दोनों भाईयो को बता दिया था। अब वह और अधिक पचडे में नहीं पड़ना चाहता था। इसलिए दोनों परिवारों के पंद्रह पंद्रह लोग एक बढ़िया से होटल में मिल बैठे और बड़े सादा ढंग से शादी हो गई। उसी दिन शाम को वह अपने घर पहुंच गए थे। दिन ख़ुशी गुजरने लगे थे। दोनों को लगने लगा था को मुश्किल समय निकल गया है। दुःख जैसे उनसे कहीं दूर चला गया हो। रोजाना पंकज मोहिंदर के सुबह का नाश्ता तैयार करती और दोपहर के खाने के लिए टिफिन में पैक कर उस के मोटर साइकल के पीछे बंधे थैले में रख देती। लंबे समय के पश्चात एक बार फिर से ऐसी सुखद परिस्थितियां बनी थी। पिछला समय उसने अनेक प्रकार के अभावों में काटा था। उस समय ने उस कई प्रकार टीसें दी थीं। लेकिन अब वह समय पीछे छूटने लगा था। वैसे तो किसी ना किसी चीज का अभाव हर एक इंसान के जीवन में थोड़ा बहुत रहता ही है। बहुत से लोग इस जीवन में किसीने किसी दुःख से पीड़ित हैं लेकिन हर एक को अपना ही दुख सब से ज्यादा बड़ा लगता है। ऐसे में अगर जीवन साथी अच्छा मिल जाए तो सब कुछ भला चंगा लगने लगता है।

समय गुज़रने लगा। उनके यहां दो सुंदर बच्चों ने जन्म लिया। एक लड़का और एक लड़की। दोनों बहुत खुश थे। अब उन के पाँव ज़मीन पर नहीं लगते थे। उसे लगने लगा था कई पंकज के घर आने से ही उसके घर में खुशियों ने दस्तक दी है। ऐसा ही सब कुछ पंकज के हृदय में भी चल रहा था। दोनों एक प्रकार के सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ साथ जीवन के इस सफ़र में आगे बढ़ने लगे थे।

बच्चे थोड़े बड़े हो कर स्कूल जाने के काबिल हुए तो उन्हें पास ही आर्मी कंटोनमेंट के स्कूल में दाखिल करा दिया गया। खर्च बढ़ने लगा था। घर में भाईयो के साथ भी जायदाद को लेकर कुछ मनमुटाव चलता आ रहा था। पुश्तैनी मकान में से उसे केवल एक कमरा और रसोई ही हिस्से में मिली थी। बाकी हिस्सा दूसरे दोनों भाईयो ने संभाल रखा था। दुकान उससे बड़े भाई ने संभाल ली थी। बच्चे थोड़े और बड़े हुए तो उसे जगह की कमी खलने लगी थी। अब कम जगह और बड़े हुए खर्चे के बारे में पंकज ने मोहिंदर से बात की। साथ ही उसने सलाह भी दी कि क्यों ना वह किसी प्राइवेट स्कूल में नौकरी के लिए आवेदन करे। इससे उन की आर्थिक हालत भी ठीक होगी और बच्चों के स्कूल जाने के बाद उसका समय भी गुज़र जाएगा। थोड़ी बहुत सोच विचार के बाद मोहिंदर मान गया था। लेकिन इस के पश्चात आने वाली समस्याएं जो थी उसने उनके बारे में भी उसे आगाह किया था। सब से बड़ी समस्या यह थी की पीछे से घर में कौन रहेगा। माँ को पंकज अपने साथ किसी भी शर्त पर नहीं रखना चाहती थी। माँ को फुलबहरी अर्थात सफ़ेद दाग की चमड़ी की बीमारी में जकड़ रखा था। इसलिए वह अपने बच्चों को उस से हर हाल दूर रखना चाहती थी। उसके अनुसार यह एक छुआ छात का ही रोग है। उसके बच्चों को भी हो सकता है। उसके साथ रहने से कहीं उनके बच्चों को भी यह रोग ना लग जाए। इस लिए वह माँ को घर आए देख झल्ला सी जाती थी। उसे देख कर कई वार वह असहज सी हो जाती थी। उसका ऐसा व्यवहार देख कर मोहिंदर ने माँ से अपनी दुरी बना ली थी। लेकिन वह कहीं ना कहीं अपने भीतरी मन में फैसला नहीं कर पा रहा था कि ऐसा करना उसके लिए सही है या गलत। आखिर वह उसकी माँ है। जन्म देने वाली जननी। जिसने बर्षो उसे पाल -पोस कर बड़ा किया। बचपन में लाड़ लड़ाया, अपनी गोद में खिलाया और इस लायक बनाया कि आज वह लोगों के बच्चे पढ़ा कर समाज में सम्मान प्राप्त कर रहा है। उसका ऐसा व्यवहार देख कर उसके हृदय में अपनी पहली पत्नी कि स्मृतियां भी मन में कौधती लेकिन वह एक झटके से उनसे दूर हट उस सपनों की दुनिया से बाहर निकल जाता। वह किसी प्रकार का तनाव मोल अब लेना नहीं चाहता था। यह सोच कर कि रोज रोज़ की चिख चिख कहीं लड़ाई का रूप ना ले ले। उसने अपना मन ठंडा कर स्वयं को समझा बुझा लिया था। यह सोच कर कि समस्यायें हमारे जीवन को बर्बाद करने के लिए नहीं आतीं बल्कि वह हमारे भीतरी सम्मान को जगाने और जीवन को संवारने के लिए आती हैं। घर में इस तरह का मनमुटाव देख कर और पंकज के हृदय को भाँप कर उसने घर छोड़ने का मन बना लिया था। जब अपने चोट पहुंचाने को आतुर हो जाएं तो आदमी पत्थर बन जाता है। आखिर उसने अपने ही नगर में एक पाश कलोनी में किराए का मकान ले कर रहने की बात सोच ली थी। लेकिन ऐसा संभव तभी हो सकता है अगर आप का साथी भी माने माने तो। पंकज ने चुप रह कर अपनी सहमति दे दी थी। फिर उसने अपने कुछ दोस्तों से किसी अच्छे से मकान की तलाश करने की बात चलाई थी।

शीघ्र ही कुछ दोस्तों की सहायता से एक दो कमरों वाला एक मकान किराए पर मिल गया था। अपने छत वाले कमरे और रसोई को ताला लगा कर बंद कर दिया और चुपचाप अपना सामान समेट कर रात को वह अपने घर को छोड़ कर निकल पड़ा था। भाई, भाभो और माँ सभी से मन ही मन संबंधों को तोड़ कर वह दहलीज़ लाँघने लगा तो उस का मन भीतर ही भीतर रो उठा था। आँखों में आंसू उमड़ पड़े तो शीघ्र ही उसने उन्हें एक ही झटके में पोंछ डाला था। वह इस समय अपनी माँ को भी अपने साथ रखना चाहता था लेकिन पंकज के व्यवहार से आहत उसने माँ को भी पीछे छोड़ दिया था। उसने पंकज को बहुत समझाने की कोशिश की कि माँ अपनी दो रोटियों के बदले हमारे घर की राखी ही नहीं करेगी बल्कि हमारे बच्चों को भी संभाले गी। लेकिन वह ऐसा सुनकर हमेशा चुप रही। अब परिवारिक सांमजस्य टूटना अवश्य हो गया था। आखिर माँ को घर में ही छोड़ कर वह अपने परिवार के साथ हो लिया।

अपने ही नगर में किराए के मकान कितनी देर रहा जा सकता है। बेशक मकान मालिक कहीं दूर प्रदेश में नौकरी करता था फिर भी कभी ना कभी तो उसे आना ही है। आखिर एक दिन वह आ ही गया था। इसकी सूचना उसने मोहिंदर को कुछ दिन पहले ही दे दी थी की वह अपनी सरकारी सेवा पूरी करने के बाद अपने घर आ रहा है। आप अपना रहने की व्यवस्था कहीं और कर लें। मुझे तो अब अपनी आयु का बाकी अंतिम हिस्सा यहीं गुज़ारना है। वह उसकी चिट्ठी पढ़ कर परेशान हो उठा था। वह आनन फानन में अपने बड़े भाई के पास गया था। किराए के मकान की जगह उसने किसी पुराने मकान को खरीदने की इच्छा ज़ाहिर की थी। उसे परिवार में से किसी ने मुँह नहीं लगाया था। माँ ने अपनी आत्मीयता जताई थी लेकिन उस के वश में कुछ भी नहीं रह गया था। वह कुछ कर नहीं सकती थी। उसकी बेबसी और लाचारी उसके चहरे पर साफ झलक रही थी। बड़े भाई ने भी उसकी मंशा समझते हुए कहा था कि अपना खुद सोचो भाई। यहां इस घर में आप के अतिरिक्त दो परिवार रह रहे हैं। तुम्हारे हिस्से इतना ही आता हैं। उस कमरे और रसोई का बताओ क्या करना है। माँ को भी तो कहीं रहना है। तुम्हें इतनी देर हो गई नौकरी करते हुए, हमने तुम से कुछ भी नहीं लिया। अगर लिया है तो बतायो। कहां छोड़े इतने कमाए पैसे। फिर भी बीच वचाव करने के उपरांत और रिश्तेदारों के साथ सलाह मशविरा करने के पश्चात उस ने कुछ पैसे उस कमरे और रसोई के एवज में उसे दे दिए थे। उसने बहुत कहा था कि सब कुछ तो आप के पास है, यह दो मंज़िला मकान, पिता जी की खचाखच भरी करियाने की दुकान, लोगों से लिया जाने वाला सारा उधार और माँ बाप की सारी धरोहर, गहना -गट्टा, सारा कुछ तो आप के पास है। मैंने क्या कभी कुछ आप से माँगा है? नहीं ना। आज मुझे जरूरत है इसीलिए आप के सामने झोली फैलाई है। तुम बड़े भाई हो कुछ तो तुम्हारी भी जिम्मेदारी बनती है। पिता के पश्चात उसका बड़ा भाई ही पिता होता है। आप मेरी कुछ तो सहायता करो। किराएदार बन कर और वो भी अपने ही नगर में रहना बहुत ही मुश्किल भरा काम है। पहले तो कोई मकान किराए पर ही नहीं देता कि पता नहीं उन्हें जरूरत पड़े तो छोड़े कि ना छोड़े। इसी नगर का रहने वाला है कहीं मालिक ही ना बन बैठे। अगर कोई अधिक किराया लेकर मान भी जाता है तो रोज रोज की खिच खिच अच्छी नहीं लगती।

कुछ दिनों के पश्चात दोनों भाई फिर इक्कठे बैठे थे। आस पास के कुछ लोगों को भी बुलाया था, कुछ रिश्तेदार भी आए थे, कोई भी झगड़े के पक्ष में नहीं था। सभी चाहते थे कि सुलह सफाई से ही बात बन जाए। आखिर में एक लाख बीस हज़ार देने की रज़ामंन्दी हुई थी। भाई ने साफ साफ कह दिया था कि इसने तो अपने सारे पैसे अपनी पढ़ाई पर लुटा दिए है। हम दोनों भाईयो ने अपनी कमाई से ही इस घर को बनाया है। इस पर हमारा और बड़े भाई के बच्चों का ही हक है। इस के इलावा एक फूटी कोड़ी भी हमारे पास नहीं है। सभी ने दबाब बना कर इतने पैसे देने को मज़बूर किया और झगड़ा घर के अंदर ही मिल बैठकर निपट गया। इतनी रकम मिल जाने के बाद उसका उत्साह थोड़ा बढ़ गया था और वह अधिक सक्रिय हो कर मकान खरीदने की तलाश करने में जुट गया था।

एक दिन उसने अपने घनिशिष्ट मित्र हरेन्द्र से हृदय की बात थी --

'मैं अब किराए के मकान से ऊब गया हूँ। आदमी का अपना घर तो होना ही चाहिए। अब हर हाल मुझे अपना घर बनाना है या फिर कोई बना बनाया घर मोल ले लेना है। अगर कहीं कोई अपने ही नगर में मिल जाए तो ठीक नहीं तो कोई खाली प्लाट खरीद कर बनाने के लिए मैं प्रयासरत हूँ। पैसे बेशक मेरे पास इतने नहीं है लेकिन उन का इंतजाम भी हर हाल मैं कर लूंगा। आप अपने आस पड़ोस में कहीं ध्यान रखना। आप के पास रहुँगा तो जिंदगी थोड़ी आसान हो कर गुज़रेगी।'

थोड़ी बहुत पूछतास करने पर उसे एक पुराना मकान मिल गया था। उसे अब शीघ्र पैसे चाहिए थे। इतने पैसे उस के पास नहीं थे। उसने पैसे इकठा करने के लिए भाग दौड़ लगाई थी। कुछ पैसे उसने अपने भविष्य निधि फंड से निकलवा लिए थे। बाकी के पैसे नगर के हिन्दू कोअपरेटिव अर्बन बैंक से उधार लेने के लिए विनय पत्र दिया था जो उसके एक मित्र की सहायता से कुछ ही दिनों में उसे मिल गए थे। इस तरह कुछ महीनो के अथक प्रयास

से उसे एक पांच मरले में बने पुराने मकान का सौदा कर लिया था। दो कमरे एक अलग से बना बाथरूम और आगे छोटा सा बरामदे के आगे सिंहन। मकान उसे पसंद आ गया था। खरीदने के बाद शीघ्र ही वह उस की मुरम्मत करवा कर खूबसूरत बना लेगा। यध्यपि उसे पैसा इकठा करने में थोड़ी मिहनत करनी पडी थी लेकिन दोस्तों की सहायता ने उसका हर काम आसान कर दिया था। दो महीनों के पश्चात उसने कमरों के पुनरनिर्माण करने में और बाथरूम को आधुनिक रूप देने,पानी के प्रबंधन और बिजली की सलाई को चुस्त दरुस्त भी करा लिया था। बच्चे थोड़े बड़े हुए तो उन्हें पास के ही आर्मी स्कूल में दाखिल करवा दिया। फीसें अधिक थी, आने जाने में भी अलग खर्च होने लगा तो वह आर्थिक रूप से तंगी महसूस करने लगा। पंकज भी कुछ खर्चीली थी। इस तरह तनख्वाह दस तारीख तक समाप्त होने लगी थी। बाकी का महीना किस प्रकार गुज़रे वह उस के लिए कोई ना कोई जुगाड़ बना ही लेता था। तनख्वाह में से कुछ रकम तो बैंक से लिए कर्ज की किस्त देने में चली जाती। कुछ पैसे बिजली, पानी और दूध वाला ले जाता। बच्चों के रोजमर्रा के खर्चे भी उन के लिए मुश्किलें ख़डी करने लगे थे। कभी कभी तो उसके पास महीने के आखिरी दिनों में पैसा भी नहीं होता था। ऐसे में वह कभी किसी मित्र से पैसे उधार ले लेता और कभी दूसरे से। लेकिन सबसे बड़ी बात ये थी की तनख्वाह मिलने पर वह उसी समय अपने मित्रों का उधार चुका देता था। इसलिए किसी प्रकार की कोई समस्या ख़डी नहीं होती थी। ज्यों ज्यों समय गुज़रता गया उसके लेन देन के व्यवहार ने उसका जीना मुश्किल कर दिया। अब तो बाजार के दो तीन दुकानदारों का उधार भी इतना सिर चढ़ गया था कि उसने उस रास्ते से आना जाना ही छोड़ दिया था। लेकिन इस बात का उसे दुःख था कि इतनी आर्थिक तंगी होने के बाद भी पंकज ने अपनी आवश्यकताएं बिल्कुल भी कम ना कि थी। उसने कभी भी बच्चों के खर्च पर अंकुश नहीं लगाया था। वह तो तनख्वाह में से अपने खर्च के लिए कुछ पैसे अपने पास रख कर बाकी सारे पैसे पंकज को दे देता था। कभी कभी तो उसके द्वारा बैंक से लिए कर्ज की किस्त भी नहीं चुकाई जाती थी। कभी जब दो महीने अपनी किस्त ना दे पाता तो भीतर ही भीतर डरता कि कहीं बैंक वाले स्कूल के मुख्यध्यापक को इस के बारे में ना बता दें। लेकिन पंकज ने हर महीने व्यूटी पार्लर जाना, अलग अलग किट्टी पार्टियों में जाना, बच्चों को साथ लेकर हर सप्ताह किसी अच्छे से होटल में खाना खाने ले जाना कभी नहीं छोड़ा था। पैसों की ऐसी तंगी उसने कभी नहीं देखी थी। इस चिंता को मिटाने के लिए अब वह शराब भी पीने लगा था। अब उसने भी पहली तारीख को जब तनख्वाह मिलती तो वह अपने दोस्तों के साथ शराब पीने बैठ जाता। कभी कभी तो उसकी आखिरी बस भी निकल जाती और वह उस दिन वहीं किसी साथी के घर रह लेता। तनख्वाह मिलने के बाद वह कुछ दिन ऐसे ही अपने दोस्तों मौज मस्ती में गुज़ार देता।

कुछ दिन पहले उसे पता चला की माँ बीमार है। उसका दिल चाहा की वह माँ का पता करने जाए। उसे बड़े नगर के किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाए और उसका इलाज कराए। लेकिन सोचने से क्या होता है। जेब में पैसे भी चाहिए। वो उसके पास नहीं थे। फिर भी उसने हिम्मत कर के अपने एक दोस्त को कुछ पैसे देनेकी गुज़ारिश की थी। लेकिन उसने भी अपनी मज़बूरी जताते हुए अपनी बेबसी ज़ाहिर कर दी। पैसों के लिए इंकार सुन कर वह अंदर ही अंदर ब हुत रोया था। लेकिन उसने अपना हौसला नहीं छोड़ा था और कुछ अन्य दोस्तों से भी गुज़ारिश की थी। लेकिन सभी अब तक उसके व्यवहार से अवगत हो चुके थे। किसी ने भी इस दुःख के समय में उसकी सहायता नहीं की। उसे लगा जैसे उसके आस पड़ोस में उसकी आत्मा को किसी ने अपनी मुठियों में लेकर मसल दिया हो। तिरस्कार पूर्ण व्यवहार लेकर वह आज शिखर दोपहर लेकर वह आज घर लोटा था। बाजार से गुज़रते हुए शराब के ठेके के साथ सटते अहाते में से आती गिलासों की खंक ने उसे अपनी तरफ खींच लिया था। उसने कुछ पलों के लिए शराब के ठेके पर निगाह मारी और फिर अपनी जेब टटोली थी। उसे जेब में सिर्फ पचास रुपये का नोट हाथ लगा था। कल स्कूल जाने के लिए बस का आने जाने का किराया था। वह कुछ झिझका था। इस से तो बड़े डॉक्टर साहिब माँ का चैक अप भी नहीं करें गे। फिर उस के माथे की तियोरियां ऊपर नीचे हुई थीं। उसने अपने हाथों को एक दूसरे से मिला कर दबाया था। उसके धनुषाकार काले पढ़ चुके होंठ तेजी से फड़कने लगे थे। उसके पावों में भी अकस्मात फड़कन शुरू हुई थी और वह सीधे अहाते कि तरफ हो लिए थे। लोहे की सलाखों के बीचो बीच बने सुराख़ में उसने हाथ डाल कर ठेके के करिंदे को पचास का नोट पकड़ाया था। उसने भी पूछा था ------

'क्या चाहिए?'

'एक क्वाटर दे दीजिए जी।'

'कौन सा?'

'भाई कौन सां भी दे दो, सब चले गा जी।'

'फिर भी कुछ तो बोलो?'

'चलो जिन्न का ही दे दो।'

जिन्न उसकी प्रिय शराब थी। करिंदे ने शीघ्र ही उसे एक जिन्न का क्वार्टर पकड़ा दिया था। शराब का क्वार्टर ले कर वह सीधा अहाते में प्रवेश कर गया था। बैहरा उसे कैबिन में बैठते देख एक कांच का गिलास और पानी से भरा जग उसके सामने रख कर जाने से पहले उसने उससे फिर पूछा -----

'कुछ और चाहिए तो बतायो?'

लेकिन वह चुप रहा था। जेब खाली थी। फिर उसने एक झटके से क्वार्टर का ढ़कन खोला और पूरा का पूरा गिलास उस में उडेल लिया था। उसमे इतनी ताकत पता नहीं कहां से आ गई थी। गिलास ऊपर तक भर गया था। पानी डालने की उसमे ज़रा सी भी जगह ना बची थी। फिर थोड़ी रुक कर उसने गिलास उठाया और पूरा का पूरा गिलास एक ही बार में अपने हलक में उडेल लिया। फिर सामने पढ़ी प्लेट में से एक चुटकी नमक ले कर उसने अपनी जीभ पर रखा और अपने मुँह का स्वाद बदला था।

अहाते में काम करने वाला छोटू उसकी तरफ आवाक देखता रहा था। वह वहां से उठ खड़ा हुआ था और रोजाना की तरह घर आ गया था। तभी पंकज ने उसे माँ को मौत का समाचार दिया था जिसे सुन कर वह ज़ोर से चीख उठा था -

'माँ!!!'

वह वहां से उसी समय उठ खड़ा हुआ था। सीधा अपने पुराने घर पहुंचा था। किसी ने भी उसकी प्रतीक्षा ना की थी। सारा परिवार और आस पड़ोस के लोग, रिश्तेदार माँ का जनाजा उठा कर श्मशान घाट की तरफ चले गए थे। अब वह क्या करे। गर्मी ने उसका बुरा हाल कर दिया था। वह लड़खडाता हुआ उनके पीछे पीछे एक किलोमीटर का फासला तय कर श्मशान घाट पहुंच गया था। माँ की चिता जल रही थी। वह भी धीरे धीरे आगे बड़ा और वहां से एक छोटी सी लकड़ी उठा कर माँ की जलती हुई चिता में डाल दी। दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार किया। इक्क्ठा हुई भीड़ सब कुछ देख रही थी। भीड़ में से किसी ने कहा था 'वेशर्म " तुम लेट हो गए भाई।

वह धीरे धीरे छोटे छोटे कदम भरता हुआ श्मशान घाट से बुदबूदाता हुआ बाहर आ गया था -

'माँ मैं अपना उतरदायित्व नहीं निभा पाया। तुम्हारी सेवा करना मेरे हिस्से में नहीं आया था। लेकिन मन में अभी भी चाह है कि अगला जन्म एक बार फिर आप कि कोख से ही लूँ। तुम ने मुझे बहुत प्यार किया है। मैं सब से छोटा था। मुझे पता है कि मुझे मिले बिना आपको चैन नहीं आता था। मुझे सब स्मरण है। आदमी माँ का क़र्ज़ कभी नहीं हो सकता। लेकिन समय ने ऐसा गीत गाया जिस में प्रेम कहीं गायब हो गया। इस रास्ते को मैंने ही अपनाया था। 'उसे अब कुछ ऐसा महसूस हो रहा कि जो वह कह रहा है उसकी माँ सब कुछ सुन रही है उसने इतना कहते हुए एक बार फिर जलती हुई चिता की तरफ देखा था। उसने फिर बुदबुदाना शुरू किया --अच्छा अलविदा। इतना कहते ही वह धडाम से बेसुध हो कर गिर पड़ा। अधिकतर लोग जा चुके थे। जो बचे थे उन्होंने उसे उठाने की असफल कोशिश की थी।

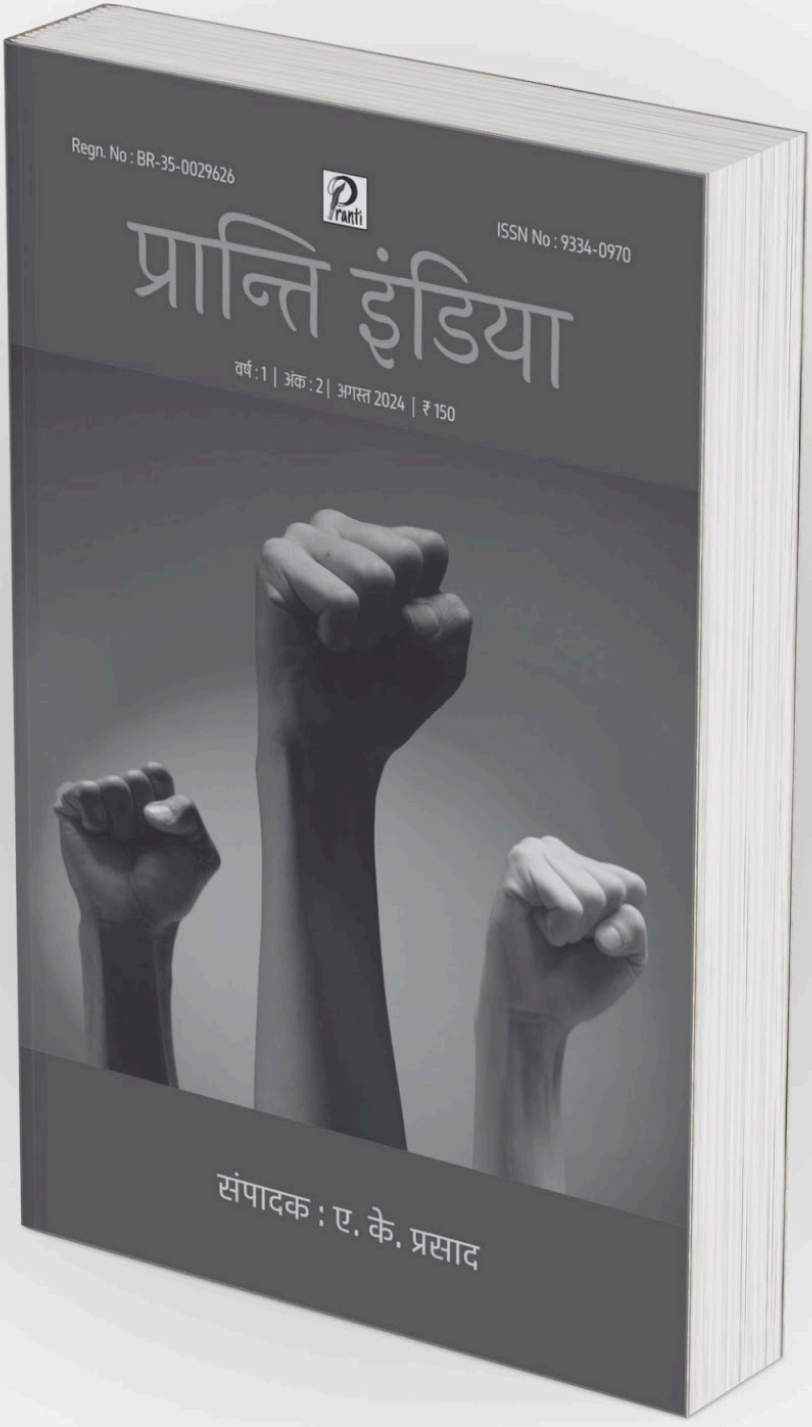
Regn. No : BR-35-0029626
ISSN No : 9334-0970
प्रान्ति इंडिया
वर्ष : 1 | अंक : 2 | अगस्त 2024 | ₹ 150
संपादक : ए. के. प्रसाद

अपनी रचना प्रकाशित करें सिर्फ ₹1/- में

नियम व शर्तें लागू*

PRANTI INDIA
Bagaura, Bihar - 841404 (India)
Ph.: +91 9453535495
www.PrantiIndia.com info@prantiindia.com

Pranti India
9 789334 097054

रजिस्ट्रेशन: बी आर 35/0029626, प्रान्ति इंडिया के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक ए. के. प्रसाद द्वारा पुरानी बाजार, बगौरा (बिहार) 841404, भारत से मुद्रित एवं प्रकाशित
*इस अंक में प्रकाशित रचनाओं के चयन एवं संपादन हेतु संपादन मंडल उत्तरदायी।